Annual Subscription Rs. 100/-

ओ३म्

27th January 2013

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

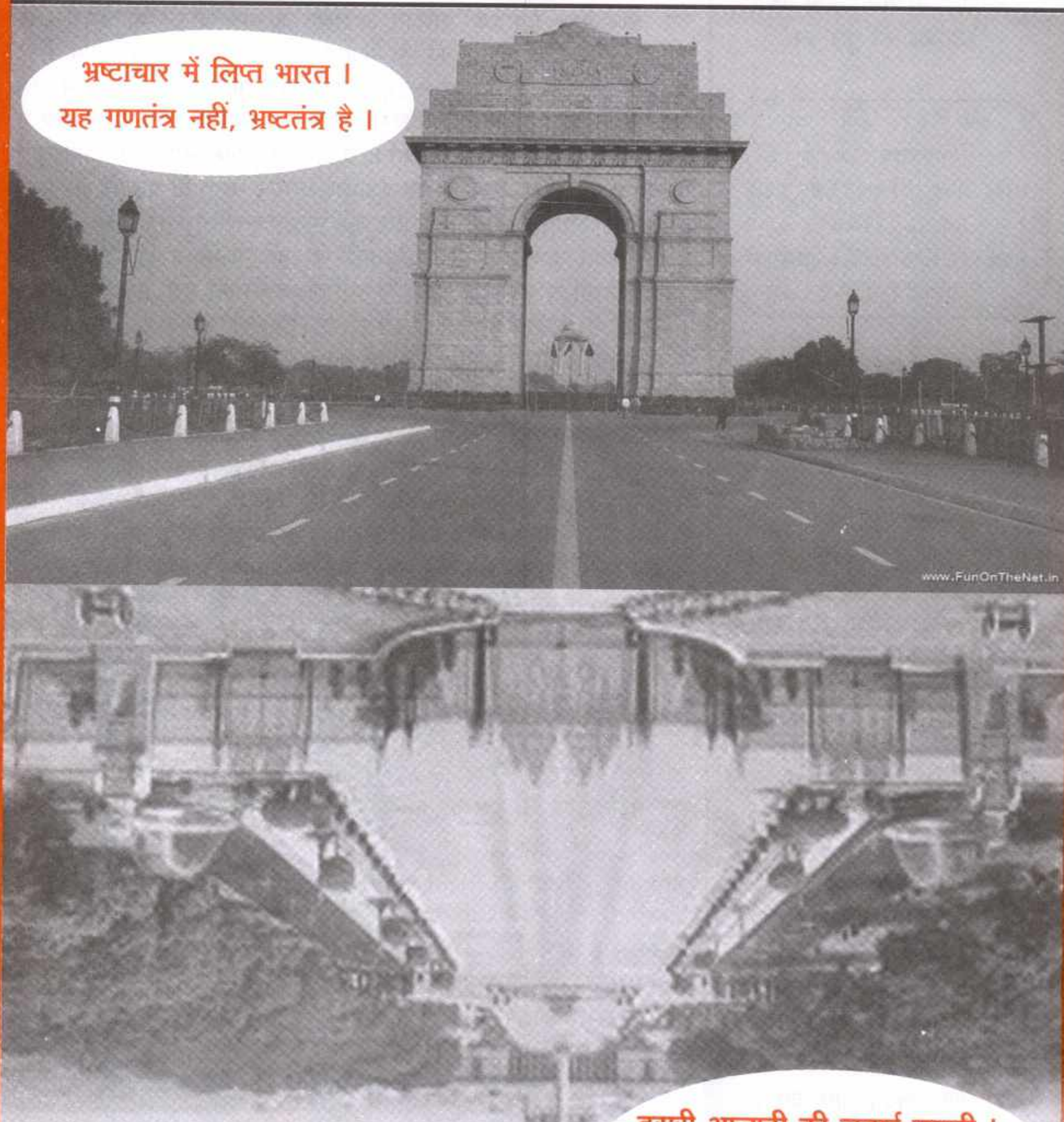

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २२ अंक : ०२
दयानन्दाब्द : १८९
सृष्टि संवत् : १९७२९४९११३
वि.सं. : २०६९
नंदन नाम संवत् मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
२७-०१-२०१३

सम्पादक
विट्ठलराव आर्य

वार्षिक मूल्य रू. 100

कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

दूरभाषः 040-24753827, 66758707, 24750363
फ्याक्सः 040-24557946, 24756983

Email :
aaryajeevan_aaryajivan@yahoo.co.in.
arpratinidhisabha@yahoo.co.in.
acharyavithal@gmail.com,
aryavithal@yahoo.co.in.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor: Vithal Rao Arya
Annual subscription: **Rs.100/-**

प्रत्येक मनुष्य को पुरूषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

जयन्ती तिथि २८ जनवरी पर विशेष

राष्ट्रीय आंदोलन को व्यावहारिक रूप दिया था लाला लाजपतराय ने

- मनोहर पुरी

'भारत की आज़ादी में 'स्वराज' के मंत्र को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उसे व्यावहारिक रूप देकर राष्ट्रीय आंदोलन के साथ जोड़ने का श्रेय शेर-ए-पंजाब लाला लाजपतराय को है। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय (२८ जनवरी १८६५-१७ नवम्बर १९२८) आधुनिक भारतीय राजनीति में एक विचारक, समाज सुधारक, पत्रकार और महान स्वतंत्रता सेनानी के रूप में प्रतिष्ठित हैं। लाला जी ऐसे विचारक थे, जिनकी दृष्टि भविष्य में आने वाले परिवर्तनों को स्पष्ट देख रही थी। इसीलिए उन्होंने भारत के प्राचीन गौरव की चेतना को जगाने के साथ-साथ देश को आधुनिकता की ओर चलने के लिए प्रेरित किया। वह बहुत पक्के राष्ट्रवादी थे। वह मानते थे कि अपने-अपने आदर्श निर्धारित करने और उन्हें कार्यान्वित करने का मूल अधिकार प्रत्येक राष्ट्र को है। उनके अनुसार 'स्वराज' ही राष्ट्र की आत्मा है। स्वराज छिन जाने पर कोई भी राष्ट्र 'मूक पशुओं का झुंड मात्र रह जाता है। उसे जिधर हांक दो, उधर ही चलता है।'

लाला जी मानते थे कि किसी राष्ट्र की स्वतंत्रता में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए। यह नितांत अस्वाभाविक और अनुचित है। जैसे किसी धर्म के अनुयायियों को दूसरे धर्म में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है, वैसे ही किसी भी राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। साईमन कमीशन के भारत आगमन का विरोध करते समय उन्होंने अपनी इस बात को ज़ोरदार ढंग से जनता के सामने रखा। उन्होंने कहा कि मैं किसी भी विदेशी को भारत की समस्याओं के समाधान योग्य नहीं मानता क्योंकि कोई भी कमीशन जातियों की स्वराज पाने की योग्यता निश्चित करने की क्षमता नहीं रख सकता। उनके विचार में कोई राष्ट्र इतना गया बीता भी नहीं होता, कि उस पर किसी दूसरे राष्ट्र के अधिपत्य को उचित ठहराया जा सके। चाहे दूसरा राष्ट्र कितना भी महान क्यों न हो। फिर भारत तो स्वयं एक महान राष्ट्र है, उस पर विदेशी शासन का क्या औचित्य है?

वस्तुतः प्रत्येक राष्ट्र को स्वतंत्र रूप से सुदृढ़ और स्वाधीन राजनीतिक जीवन जीने का पूरा अधिकार है। शासितों की सहमति ही किसी सरकार का एकमात्र तर्कसंगत और वैध आधार है। उनकी इन बातों से महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक और बंगाल के बिपिन चंद्रपाल भी पूरी तरह सहमत थे। स्वतंत्रता के संग्राम में अपनी एक ऐसी विचारधारा के कारण इन्हें इतिहास में लाल-बाल-पाल के रूप में याद किया जाता है। भले ही इन तीनों विचारकों के विचार उस समय के नरमपंथी नेताओं को पसंद नहीं थे। परंतु यह सत्य है कि इन्होंने स्वतंत्रता का लक्ष्य पाने के लिए एक निश्चित मार्ग का चुनाव कर दिया था।

लाला लाजपत राय का जन्म २८ जनवरी १८६५ को पंजाब के लुधियाना ज़िले के एक गाँव में हुआ। उनके पिता का नाम लाला राधाकृष्ण था। लाला लाजपतराय का दृढ़ विश्वास था कि अंग्रेज़ों ने शस्त्र-बल से भारत पर विजय

(...शेष पृष्ठ क्र. १५ पर)

प्राचीन शिक्षा पद्धति की एक झलक : सत्यकाम की शिक्षा

- आचार्य रामनाथ वेदालंकार

जाबाल के पुत्र सत्यकाम ने एक दिन अपनी माता से कहा, माँ मैं गुरुकुल जाकर ब्रह्मचर्यवास करना चाहता हूँ, बता तो, मेरा गोत्र क्या है ? माता ने उत्तर दिया मैं नहीं जानती तेरा गोत्र क्या है। मैं अपनी युवावस्था में परिचारिणी होकर एक घर से दूसरे घर घूमती थी, तभी मेरे गर्भ से तूने जन्म लिया। सो मैं नहीं जानती कि तेरा गोत्र क्या है। मेरा नाम जाबाल है, तेरा नाम सत्यकाम है, इसलिए, जब आचार्य तुझसे गोत्र पूछें, तब तू अपने को 'जाबाल सत्यकाम' ही बतला देना।

इस वार्तालाप के बाद एक दिन सत्यकाम हारिद्रुमत गौतम नामक आचार्य के पास जा पहुँचा और बोला- मैं आपके निकट ब्रह्मचर्यवास करना चाहता हूँ, क्या मैं उपनयन के लिए आ जाऊँ ? आचार्य ने प्रश्न किया, हे सौम्य तेरा गोत्र क्या है? मैने माता से पूछा था। माता ने कहा, पुत्र ! मैं नहीं जानती तेरा गोत्र क्या है? मैं अपनी युवावस्था में परिचारिणी होकर इस घर से उस घर घूमती थी। तभी एक दिन मेरे गर्भ से तूने जन्म लिया। सो मैं नहीं जानती तेरा गोत्र क्या है। मेरा नाम जबाल है, तेरा सत्यकाम। इसीलिए जब आचार्य तुझसे गोत्र पूछें, तो 'जबाल सत्यकाम' ही बतला देना।

आचार्य, सत्यकाम के सरलता से कहे हुए निश्छल वचनों को सुनकर बोले- वत्स मैंने समझ लिया कि तू ब्राह्मण ही है, क्यों कि जिसमें ब्राह्मणत्व नहीं है, वह इस प्रकार सच नहीं कह सकता। जा समीधा ले आ, मैं तुझे उपनीत करूँगा, तू सत्य से विचलित नहीं हुआ है। यह कह आचार्य ने उसे उपनीत कर लिया और दुबली-पतली चार सौ गौएं उसे सौंपकर कहा- इन्हे जंगल में ले जा और इनकी सेवा कर। सत्यकाम ने गौएं जंगल की ओर हाँक दी और जाते हुए बोला, गुरुजी जब तक ये सहस्त्र नहीं हो जाएंगी, तब तक नहीं लौटूँगा।

सत्यकाम कुछ वर्ष तक जंगल में फिरता-फिरता गौओं की सेवा करता रहा। जब वे चार सौ से एक सहस्त्र हो गई, तब एक दिन बैल (वृषभ) ने उसे पुकारा- 'सत्यकाम'! हाँ भगवन्, सत्यकाम ने उत्तर दिया। बैल बोला- हे सौम्य हम सहस्त्र तो हो गए, अब हमें आचार्य कुल में ले चलो न । और लो, मैं तुम्हें ब्रह्म के एक पाद का उपदेश भी करता हूँ। 'कीजिए भगवन' सत्यकाम ने कहा। बैल बोला देखो प्राची दिशा एक कला है, प्रतीची दिशा दूसरी कला है, दक्षिण दिशा तीसरी कला है, उदीची दिशा चौथी कला है। यह ब्रह्म का एक चतुष्कल (चार कलाओं वाला) पाद है, जिसका नाम है 'प्रकाशवान्'। जो ब्रह्म के इस चतुष्कल पाद को समझकर 'प्राशवान' रूप में इसे उपासता है,वह स्वयं भी इस लोक में प्राशवान हो जाता है और प्रकाशवान् लोकों को अपने लिए जीत लेता है। फिर बैल ने कहा, यह ब्रह्मा का एक पाद मैंने बता दिया। अगले पाद का उपदेश तुझे अग्नि करेगा।

अगले दिन सत्यकाम ने गौएं आचार्य कुल की ओर हाँक दी। किन्तु इन कई वर्षों में वह बहुत दूर निकल आया था। चलते-चलते शाम हो गई। तब उसने उसी दिन वहीं पड़ाव करने की इच्छा से गौओं को रोक दिया और अग्निहोत्र की तैयारी करने लगा। अग्नि प्रज्वलित कर समिधादान कर कर, पश्चिमाभिमुख हो पूर्व दिशा में बैठ गया। इतने में अग्नि ने उसे पुकारा- 'सत्यकाम'! हाँ भगवन् सत्यकाम ने प्रत्युत्तर दिया। 'सौम्य' क्या मैं ब्रह्म का एक पाद तुम्हें कहूँ?- अग्नि बोला। 'कहिये भगवन' सत्यकाम ने प्रत्युत्तर दिया। अग्नि कहने लगा- पृथ्वी एक कला है, अन्तरिक्ष दूसरी कला, द्यो तीसरी कला है, समुद्र चौथी कला है। यह ब्रह्म का एक चतुष्कल पाद है, जिसका नाम है 'अनन्तवान'। जो ब्रह्म के इस चतुष्कल पाद को समझकर 'अनन्तवान' रूप में इसे उपासता है, वह स्वयं भी इस लोक में अनन्तवान हो जाता है और अनन्तवान लोकों को अपने लिए जीत लेता है। फिर अग्नि ने कहा, अगले पाद का उपदेश तुझे हंस करेगा।

अगले दिन सत्यकाम गौओं को आगे हाँक ले चला। चलते-चलते फिर शाम हो गई। तब वहीं पड़ाव करने की इच्छा से उसने गौओं को रोक लिया। पहले दिन की तरह अग्निहोत्र की तैयारी की। अग्नि प्रज्वलित कर, समिधादान कर, पश्चिमाभिमुख हो पूर्व दिशा में बैठ गया। इतने में एक हंस उड़ता हुआ आया और उसने पुकारा- 'सत्यकाम' ! 'हाँ भगवन्, सत्यकाम ने उत्तर दिया। 'हे सौम्य, क्या मैं तुझे ब्रह्म का एक पाद कहूँ? हंस ने पूछा। 'कहिये भगवन्' सत्यकाम ने प्रत्युत्तर दिया। हंस ने कहा- अग्नि एक कला है, सूर्य दूसरी कला है, चन्द्रमा तीसरी कला है, विद्युत चौथी कला है। यह ब्रह्म का चतुष्कल पाद है, जिसका नाम 'ज्योतिष्मान' है। जो ब्रह्म के इस चतुष्कल पाद को समझकर ज्योतिमान् रूप में इसे उपासता है, वह स्वयं भी इस लोक में ज्योतिष्मान

हो जाता है और योतिष्मान लोकों को अपने लिए जीत लेता है। फिर हंस बोला, अगले पादका उपदेश तुझे मुद्‌गु करेगा।

अगले दिन सत्यकाम गौओं को और आगे हाँक ले चला। चलते-चलते शाम हो गई, तब वहीं पड़ाव करने की इच्छा से उसने गौओं को रोक दिया। हमेशा की तरह अग्निहोत्र करने के लिए अग्नि प्रज्वलित कर, समिधादान कर पश्चिमाभिमुख हो पूर्व दिशा बैठ गया।

इतने में मद्‌गू उड़ता हुआ आया और उसे पुकारा- 'सत्यकाम'! 'हाँ भगवन्', सत्यकाम ने उत्तर दिया। हे सौम्य, क्या मैं तुझे ब्रह्म का एक पाद कहूँ? मद्‌गु ने पूछा। 'कहिये भगवन्' ! सत्यकाम ने प्रत्युत्तर दिया। मद्‌गु ने कहा- प्राण एक कला है, चक्षु दूसरी कला, श्रोत्र तीसरी कला है, मन चौथी कला है। यह ब्रह्म का एक चतुष्कल पाद है, जिसका नाम आयतनवान् है। जो ब्रह्म के इस चतुष्कल पाद को समझकर 'आयतनवान' के रूप में इसे उपासता है, वह स्वयं भी इस लोक में आयतनवान हो जाता है और आयतनवान लोगों को अपने लिए जीत लेता है।

अब आचार्य कुल समीप ही था। अगले दिन चलकर गायों के साथ लिये सत्यकाम आचार्य के पास पहुँच गया। आचार्य ने कहा- 'हे सत्यकाम' ! हाँ भगवन् सत्यकाम ने उत्तर दिया।

आचार्य बोले, 'हे सौम्य तू तो ब्रह्मवित् सा प्रतीत होता है, किसने तुझे उपदेश दिया है' ? उत्तर में सत्यकाम ने विनीत भाव से कहा- 'मनुष्यों में से किसी ने मुझे उपदेश नहीं दिया। जो कुछ मैंने पाया है, वह मनुष्यातिरिक्त पशु-पक्षी आदि से पाया है। पर वह तो नाम मात्र है, नगण्य है। आप भी मुझे इच्छानुसार उपदेश कीजिए। आप जैसों से ही मैंने सुना है कि आचार्य मुख से ग्रहण की हुई विद्या साधुफल को प्राप्त कराती है। पर आचार्य ने उसे कुछ भी उपदेश नहीं किया। कहा- तू तो पूर्ण ब्रह्मवित् हो गया। तेरे ज्ञान में कुछ भी न्यूनता नहीं है।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर एक पुकार एक गुहार

● भारत माता की आत्मा भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, जात-पात, नशाखोरी, नारी उत्पीड़न, शोषण और पाखण्ड की बेड़ियों में आज भी जकड़ी हुई हैं।

● भारत-माता की आत्मा रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित तीस करोड़ भारतीयों को गरीबी की रेखा से नीचे बिलखते-सिसकते देख आज भी आहत है।

● भारत-माता की आत्मा बाज़ारवादी सोच के वाबाओं द्वारा अध्यात्म, योग और आयुर्वेद के नाम पर करोड़ों भारतीयों के विश्वास, आस्था और श्रद्धा के हो रहे दोहन व शोषण से आज भी दुःखी है।

● भारत माता की आत्मा लाखों बन्धुआ मजदूरों के बहते खून-पसीने और लुटते श्रम की गरमाहट से आज भी पीड़ित है। भारत-माता की आत्मा विधायिका, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका और पत्रकारिता के धराशायी होते मूल्यों को देख आज भी खून के आंसू बहा रही है।

● भारत-माता की आत्मा कन्या भ्रूण हत्याओं, जघन्य हत्याकाण्डों, बलात्कारों, अपहरणों, डकैतियों, फिरौतियों और घोटालों के ऊंचे उठते ग्राफ तथा तस्करी, वेश्या वृत्ति, टैक्स चोरी, जखीरेबाज़ी, मिलावट, कालाबाज़ारी के बढ़ते क्षेत्रों को देख आज भी रुदन कर रही है।

● भारत माता की आत्मा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के बढ़ते हस्तक्षेप और प्रभाव को देखकर परम्परागत भारतीय शीतल पेयों के स्थान पर बढ़ती पेप्सी-कोला संस्कृति को देखकर, आयुर्वेदिक दवाओं के स्थान पर निषिद्ध व खतरनाक घोषित हो चुकी महँगी एलोपैथिक दवाओं की बढ़ती लोकप्रियता देखकर तथा परम्परागत भारतीय जीवन मूल्यों के स्थान पर भोगवादी पाश्चात्य अपसंस्कृति के कसते शिकंजे को देखकर हताश है, संतप्त है, दुखी है।

● स्वाधीनता के गत छह दशकों में भले ही हमने उद्योग, कृषि, विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, परिवहन, आयुध आदि क्षेत्रों में कितना ही उल्लेखनीय विकास क्यों न कर लिया हो, लेकिन सच्चाई यह है कि हमारा राष्ट्रीय चरित्र गिरा है, हमारी आध्यात्मिक शक्ति का ह्रास हुआ है। मानवता के मानदण्डों की गरिमा घटी है और हमारा घोर नैतिक पतन हुआ है। यह एक ऐसी स्थिति है, जो हमारे विकास पर प्रश्नचिह्न लगाती है, उसका मज़ाक उड़ाती है। रॉकेट युग का मानव यदि जमीन पर चलना भूल जाएगा, तो उसके चाँद पर पहुँचने का क्या अर्थ रह जाएगा?

● जिस देश में राजधर्म का आदर्श जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता पर आधारित राजनीति की गंदी नालियों में बहने लगा हो, जिस देश में धर्मनीति पाखंड, अंधविश्वास, बाह्य प्रदर्शन औपचारिकता, आत्म प्रचार, धनार्जन और राजनीति की चेरी बन गई हो, जिस देश में गुरुकुल शिक्षा पद्धति लार्ड मैकाले के षडयंत्र का शिकार होकर अपने मूल्यों को पूर्णतया खो चुकी हो, बुद्ध, महावीर, नानक, दयानन्द और गांधी के जिस अहिंसावादी देश में पौ-फटते ही लाखों गाय-भैंस, भेड़-बकरियाँ, घोड़े-ऊँट, मुर्गे, सुअर काट दिये जाते हों और जिस देश के नागरिक अपनी असली पहचान 'आर्यत्व' को त्याग रहे हों, वेद को तथा वैदिक संस्कृति को भुला रहे हों, ऋषि-मुनियों के अवधान को भुला रहे हों, उस देश की आत्मा सुख व आनंद की अनुभूति कैसे कर सकेगी?

मेरे देश के नौजवानों

इस दयनीय व शर्मनाक स्थिति में गणतंत्र दिवस की इस पावन वेला पर आओ, हम सब मिलकर अपने हृदय में भारतीय पुनर्जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर संकल्पाग्नि प्रज्वलित करें तथा आर्य राष्ट्र के निर्माण का अभियान चलाएं, अपने जीवन और जवानी को इस महान राष्ट्रयज्ञ की समिधा बनाकर समर्पित करें। जो चाहते हैं, इस यज्ञ की समिधा बनना, वे शीघ्र अपना नाम, पता एवं कार्य की रूपरेखा हमें लिखकर भेजें। लगभग छह लाख गाँवों तथा ६५० जिलों में संगठन-संघर्ष की मशाल थामने के लिए हमें कम से कम एक लाख युवा चाहिए। देखते हैं- कौन पहल करेगा?

- *स्वामी अग्निवेश*

निर्भया तूने जगाया भारत

- डॉ. वैदिक प्रताप वैदिक

उसे निर्भया कहें, या दामिनी ? वह हमेशा के लिए सो गई, लेकिन उसने भारत को जगा दिया। हज़ारों भारतीयों को जगाया। हज़ारों बलात्कार हर वर्ष होते हैं, लेकिन वे हमारी राजनीति के नक्कारखाने में तूती की तरह हो जाते हैं। जितने बलात्कारों का पता चलता है, उनसे कहीं ज्यादा पर मौन का ताला जड़ दिया जाता है। यह बलात्कार दिल्ली में हुआ।, चलती बस में हुआ और निर्भया ने उसका मुकाबला वीरांगना की तरह किया। ज़रा कल्पना करें कि उन बलात्कारियों पर निर्भया कितनी बहादुरी से दामिनी की तरह टूट पड़ी होगी कि उसे काबू में करने के लिए उन नर-पशुओं को उसकी अतड़ियाँ निकालनी पड़ीं। यह जघन्य कृत्य भी अनजाना ही रह जाता, अगर लाखों लोग केरल से कन्याकुमारी तक मैदान में नहीं उमड़ पड़ते।

'निर्भया' और 'दामिनी' तो उसके दिये हुए नाम हैं। अब उसके असली नाम को छुपाने की ज़रूरत क्या है ? बलिया में जन्मी गरीब परिवार की यह लड़की भारत की सभी महिलाओं के लिए उसी तरह प्रेरणा की स्रोत बननी चाहिए, जिस तरह महाराणी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती या अहिल्याबाई बनी हैं। सारे देश में भारत माँ की इस महान बेटी के स्मारक बनने चाहिए, जो किसी भी संभावित बलात्कारी के लिए ये मौत की घंटी तबी बनेंगे, जबकि दामिनी के अविलंब मौत की सज़ा दी जाए।

यह सारा अगर साल-दो साल या पाँच साल-दस साल बाद मिलती है,, तो हमें मानना होगा कि निर्भया का बलिदान व्यर्थ गया। जॉन स्टुअर्ट मिल का यह कथन लागू हो जाएगा कि देर से किया गया न्याय तो अन्याय ही है। यह निर्भया की बहादुरी का अपमान भी होगा और देश के करोड़ों लोगों के आक्रोश की बेशर्म उपेक्षा होगी। इस देशव्यापी तूफान को उठे कई दिन बीत गए, लेकिन उन हत्यारों को सज़ा के कोई आसार नज़र नहीं आ रहे हैं। लोग कहते हैं कि बलात्कारियों को नपुंसक बना दो। मैं पूछता हूँ कि क्या हमारी सरकार स्वयं नपुंसक नहीं बनी हुई है? एक नपुंसक किसी और को कैसे बना सकता है।

इस मामले में हमारी सरकार का रवैया आत्मघाती रहा है। इस सरकार को 'हमारी' हम कैसे कहें? यह तो पराई सरकार से भी बदतर है। यह भारत की जनता को 'पराया' समझती है। उसका साथ देने की बजाय उसका विरोध करती है। इसीलिए इसने पिछले साल रामलीला मैदान में रावणलीला मचाई और इस साल इंडिया गेट और जंतर-मंतर पर दुबारा लट्ठ बरसाए। बाबा रामदेव पूर्व सेनापति वी.के. सिंह और मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। हम हज़ारों साथियों को लेकर वहाँ क्यों गए थे? सरकार का विरोध करने नहीं, बल्कि उसका मनोबल बढ़ाने के लिए। हमारे अधमरे नेताओं में जान फूंकने के लिए, ताकि वे नींद से जगें और बलात्कारियों के विरुद्ध तुरंत कठोरतम कार्रवाई करें। करोड़ो लोगों की भावनाओं का सम्मान करना तो दूर रहा, हमारे चुने हुए सेवकों की इस सरकार ने निहत्थी जनता पर लट्ठ बरसाकर यह सिद्ध कर दिया कि वह जनता के विरुद्ध है। (यानि बलात्कारियों के साथ है)। इस सरकार ने लोकतंत्र को पुलिस तंत्र में बदल दिया। इतनी डरपोक तो ब्रिटिश सरकार भी नहीं थी। दो-तीन वर्ग किलो मीटर नई दिल्ली के इस छोटे से 'शाही -क्षेत्र' की रक्षा के लिए १८ हज़ार जवानों को झोंक देना आखिर किस बात का सबूत है ? क्या यह अनैतिक बल-प्रयोग नहीं है? भ्रष्टाचार, अत्याचार और बलात्कार तीनों एक साथ?

मेरी यह बात नेताओं के समझ में तो आई, लेकिन बहुत देर से ! नींद में थे। कुंभकर्ण की ! अचानक उठे और किसी अफसर का लिखा बयान पढ़ दिया और पूछ भी लिया, 'ठीक रहा न ! निर्भया को सिंगापुर भेज दिया। पता नहीं, किसकी जान बचानी थी? निर्भया की या सरकार की ? निर्भया की अंत्येष्टी भी भयभीत होकर की गई। उसकी अंत्येष्टी यदि निर्भयतापूर्वक की जाती, तो सारे देश का संकल्प बलात्कार के विरुद्ध अधिक सुदृढ़ होता। लेकिन सरकार बला टालने में लगी हुई है। इसीलिए शीर्ष पर जमे लोग अंत्योष्टि में शामिल हो गए। अंत्येष्टि का प्रचार न हो, लेकिन उनके शामिल होने का प्रचार ज़रूर हो ! वाह, हमारे 'सेवकों' की भी क्या अदा है? इनसे बेहतर तो दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित का सोत्साहस रहा। उन्होंने निर्भया के अंतिम बयान में धांधली करने वाली पुलिस के ख़िलाफ खुलेआम शिकायत की। किसी सच्चे और सहृदय नेता की तरह वे इंडिया गेट भी पहुँचीं।

अ-नेताओं यानि अनाड़ी नेताओं की डरी हुई सरकार, जो कुछ कर सकती है, उसने वह किया। आयोग बिठाया, निर्भया को सिंगापुर भिजवाया। अंत्येष्टि में शामिल हुई, बयान जारी किए। अब वह प्रतीक्षा कर रही है कि जैसे अण्णा का ज्वार शीघ्र ही भाटे में बदल गया, वैसे ही निर्भया का बुखार भी जल्द ही उतर जाएगा, लेकिन वह यह नहीं देख पा रही है कि जनता के मौन क्रोधकी स्थायी जमा राशि लगातार बढ़ती जा रही है। अब न कोई लोहिया है, न जयप्रकाश न विश्वनाथ प्रताप सिंह। अब लोगों को किसी की ज़रूरत नहीं है। वे अपने आप उठ खड़े होते हैं। बस, ज़रा-सी चिन्गारी दिखनी चाहिए। उसे ज्वाला बनने में देर नहीं लगती। ऐसा नहीं है कि इस ज्वाला की तपन कुर्सियों में जमे ये अ-नेता महसूस नहीं कर रहे हैं। वे कर रहे हैं और जमकर कर रहे हैं। लेकिन वे मजबूर हैं। वे किसी ज्वाला में से कभी नहीं गुज़रे। वे इतिहास के धक्के से ऊपर आये हैं। उन्हें जनता का धक्का धराशायी करेगा।

वेदानुकूल सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य प्राप्ति के लिए हम क्या कर रहे हैं ?

- स्वामी इन्द्रवेश

स्वामी इंद्रवेश ने वेद सम्मेलन में दिये अपने भाषण में आर्य समाज की वर्तमान शैली की आलोचना करते हुए कहा कि, मुझे वेद-प्रचार का दंभ भरने वाले ही आज इस पक्ष में सबसे बड़े बाधक दिखाई देते हैं।

आपने कहा कि, आर्य समाज के नेता अपने बच्चों को आंग्ल भाषा के माध्यम से उच्च स्तरीय मॉडर्न स्कूलों में पढ़ाते हैं। गुरुकुल में पढ़ाकर वे अपने बच्चों को बेकार नहीं करना चाहते। वे क्यों ऐसा करते हैं? तो इस प्रश्न का एक ही उत्तर है कि हम वैदिक विद्वानों की नई पीढ़ी के लिए कुछ भी वार्षिक सुविधा का प्रबंध नहीं कर पा रहे हैं। आज वेद-प्रचार के स्थान पर हमारा संगठन छिछले प्रचार पर ही शक्ति लगाये हुए हैं। सरकार ने तो धर्मनिरपेक्षता के नाम पर बंटाधार कर ही दिया है। तब क्या आर्य समाज भुखमरी, शोषण और असमानता के रहते वेद प्रचार मात्र की चर्चा से समस्याओं का समाधान खोज पाएगा? क्या आप इस सत्य को झुठला सकते हैं कि अनेक वेदपाठी विद्वान भूखों मरते हैं और अनेक आर्थिक समस्याओं के शिकार रहकर विदा भी हो गए हैं । सत्ता में आये मदहोश मंत्रीगण एवं सरकार इस दिशा में कोई पग उठाने को तैयार नहीं है। तब मैं पूछना चाहता हूँ कि आर्यसमाज क्या दरिद्रता के मार्ग का अनुसरण करने का कोई फैसला कर चुका है? यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप में कमी आयी है। इस पर चिंतन किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा- आज कि आवश्यकता यह है कि वेद प्रचार, विद्वानों की गोष्ठियाँ होनी चाहिए और महीनों विचार-विमर्श के पश्चात सम्मेलनों में जनहित के कार्यक्रमों की घोषणा मात्र न करके, (जनता का तदनुकूल आचरण बनाने की दिशा में) सक्रिय योजनाओं को मूर्त रूप दिया जाना चाहिए। प्रश्न उभरता है और मैं पूछता हूँ कि आध्यात्मिक पक्ष के साथ-साथ सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की महर्षि दयानंद की घोषणा का क्या हुआ? छठे समुल्लास के प्रकाश में जब तक आर्य समाज दरिद्र नारायण की दरिद्रता दूर करने के उपायों और निरंकुश पूंजीवाद से टक्कर लेने का निर्णय नहीं लेगा, वेद-ज्ञान पुस्तकों तक ही सीमित रह जाएंगे। क्योंकि भूखा पहले शारीरिक भूख मिटाना चाहता है। पीछे वह आत्मिक भूख के निवारणार्थ आगे बढ़ेगा। जब मैं ऐसी बात कहता हूँ, तो लोग हमें कम्युनिस्ट कहते हैं। यदि मैं कम्युनिस्ट हूँ, तो निश्चित मानिये कि महर्षि दयानंद तो फिर सबसे बड़े कम्युनिस्ट थे, जो भारत की दरिद्रता स्थायी रूप से दूर करने के उपायों और निरंकुश पूँजीवाद से टक्कर लेने के लिए सतत प्रयत्नशील थे। उनके हृदय में दरिद्रों के लिए अपार प्रेम अबाध प्रेम था।

उन्होंने यह भी कहा, आर्य समाज में नया रक्त आना चाहिए और उसे नये दृष्टिकोण से दीक्षित होकर समाज की विषमता से टक्कर लेने को तैयार होना चाहिए। वृद्ध नेतृत्व की भी इस नई पीढ़ी को हृदय से आशीर्वाद देने के लिए तैयार होना चाहिए। इतिहास इस बात का साक्षी है। वही धर्म जीवित रह सकता है, जो अभाव को भाव में बदल दे और समाज की ज्वलंत समस्याओं, विषमताओं का समाधान प्रस्तुत कर सके। आर्य समाज को अपनी तेजस्विता को प्रचण्ड रूप देकर, सर्वतोमुखी भ्रष्टाचार से टक्कर लेने के लिए तैयार होना चाहिए। अन्यथा वह युग-दौड़ में पिछड़ जाएगा। महर्षि दयानंद राजनैतिक, सामाजिक समस्याओं के समाधान में हरेक आर्य को आगे बढ़ा देखना चाहते थे, जिससे वह अध्यात्म बल द्वारा प्राप्त महती शक्ति का उपयोग जनसाधारण के हित में कर सकें।

उन्होंने यह भी कहा- आखिर समाज के उत्थान में अर्थ के महत्व की आप कैसे उपेक्षा कर सकते हैं? वेदों में अर्थ के उपार्जन की पवित्रता के कड़े निर्देश हैं, फिर भी उसे त्याग पूर्वक उपभोग तथा दान अर्थात निर्धनों के हित में व्यय करने का उपदेश भी है पर यहाँ वेद को सुनना-सुनाना ही धर्म समझा जा रहा है। उसका जीवन के फलितार्थों के लिए अपनाना और तदनुकूल आचरण करना आवश्यक नहीं रह गया है। यह खेद का विषय है।

उन्होंने पुनः अनुरोध किया कि वैदिक विद्वानों की बड़ी-बड़ी गोष्ठियों का आयोजन किया जाना चाहिए, जो हमारे जीवन मूल्यों को स्थिर कर, जनसाधारण की पहुँच के लायक कार्यक्रम तैयार करने में जुटें, तभी महर्षि के मिशन रूप संस्थापित आर्य समाज की तेजस्विता की रक्षा की जा सकती है और देशहित में तब यह निश्चय ही महत्वपूर्ण संगठन के रूप में अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकेगी। अतः मेरा आर्य जगत् के वरिष्ठ नेतृत्व और विद्वत् वृन्द से हार्दिक अनुरोध है, कि वह त्याग मार्ग का अवलंब कर महर्षि के मन्तव्य को समझने के लिए हृदय मन्दिर में झांकने का सतत प्रयास करें। तभी हमें वास्तविक दृष्टि प्राप्त हो सकेगी।

संस्कृत की उपेक्षा अक्षम्य राष्ट्रीय अपराध

पं. उमाकांत उपाध्याय

संस्कृत संसार की प्राचीनतम भाषा है। निर्विवाद रूप से संस्कृत संसार के प्राचीनतम साहित्य में है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर का कहना है कि ऋग्वेद संसार के पुस्तकालय का प्राचीनतम ग्रंथ है। ऋग्वेद में १० हज़ार से अधिक मंत्र हैं। मैक्समूलर का यह भी कहना है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और कुरान, बाईविल, जेन्दावस्ता यह भी ईश्वरीय ग्रंथ हैं। वेद इन सारे ग्रंथों से लाखों-लाख वर्ष पुराने हैं। मैक्समूलर एक बड़े महत्व की वात यह कहता है कि यदि ईश्वर ने बाईबिल, कुरान आदि से पहले वेद के ज्ञान का प्रादुर्भाव न किया होता, तो यह उस युग के मनुष्यों के साथ परमेश्वर की ओर से अन्याय हो जाता। कोई कारण नहीं है कि किसी युग के मनुष्य ईश्वरीय ज्ञान से वंचित रहे।

वेद के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, रामायण, महाभारत सभी ग्रंथ संस्कृत में हैं। बौद्ध और जैनियों का बहुत बड़ा साहित्य संस्कृत में है। दो हज़ार साल पहले तक लिखने, बोलने, धार्मिक विधियाँ आदि सभी कुछ संस्कृत में था। व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, ज्ञान-विज्ञान सभी कुछ संस्कृत में ही है। शून्य दशमलव तक तथा अक्षांश, देशांतर, भूगोल, खगोल सारा विज्ञान संस्कृत में ही लिपिवद्ध हुआ है।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से संस्कृत आज के दिन भी सारे देश की सुदृढतम श्रृंखला है। वही वेदमंत्र, वही स्वस्तिवाचन, वही शांतिकरण के मंत्र यदि रामेश्वरम में पढ़े जाते हैं, तो मानसरोवर, गौरी-शंकर, केदारनाथ और बद्रीनाथ, गंगोत्री में भी वही मंत्र पढ़े जाते हैं। वही मंत्र अरब सागर के किनारे सोमनाथ के मंदिर में पढ़े जाते हैं और वही मंत्र बंगाल की खाड़ी, पूर्वी महासमुद्र गंगासागर के तट पर भी पढ़े जाते हैं। यह संस्कृत भाषा की ही विशेषता है कि कश्मीर से लेकर, मानसरोवर से लेकर कन्याकुमारी, रामेश्वरम तक और अरब सागर द्वारिकापुरी से लेकर गंगासागर तक सारा देश एकता के सुर में गूँज उठता है। ऐसी प्राचीनतम ब्रह्मतम और संपन्न एवं महत्वपूर्ण भाषा की उपेक्षा राष्ट्रीय अपराध है। कम से कम भावनात्मक एकता संपूर्ण राष्ट्र में बनी रहे, इसके लिए सारे देश में संस्कृत की शिक्षा देना अनिवार्य होना चाहिए।

अंग्रेज़ों के राज्य में जब परतंत्रता का युग था, उस समय क्लासिल भाषा के रूप में संस्कृत की पढ़ाई सारी भारतीय भाषाओं के साथ अनिवार्य थी। हिंदी, गुजराती, मराठी, बंगाली, तमिल, तेलुगु कन्नड़ आदि सभी भाषाओं के साथ संस्कृत का अध्यापन अनिवार्य था। हाईस्कूल तक सभी भारतीय बच्चे संस्कृत पढ़ते थे और गीता-गायत्री स्तोत्र आदि उनके लिए अपरिचित नहीं थे। केवल अरबी, फारसी मूल के विद्यार्थी उर्दू पढ़ते थे। अतः सारे भारतीय मूल के विद्यार्थी हाईस्कूल तक इस भावनात्मक एकता से अनायास ही परिचित हो जाते थे। किंतु अब स्थिति भिन्न है। संस्कृत कहीं भी पढ़ाई नहीं जा रही है। अब तो स्थानीय स्वार्थ और आंचलिक दबाव के चलते आंचलिक भाषाएं बड़ी बड़ी बलवती हो उठी हैं।

स्वतंत्रता मिलने के तुरंत पश्चात एक बार यह माँग दक्षिण भारत से उठी थी कि हिंदी के स्थान पर संस्कृत को राष्ट्रभाषा और जनसंपर्क की भाषा बना दिया जाए। वह माँग उत्तर भारत के हिंदी प्रेम में दबा दी गई। गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, पंजाब, बंगाल समेत सारा उत्तर भारत हिंदी के लिए ज़ोर लगाने लगा और हिंदी कहने को राष्ट्रभाषा बन गयी। अभी भी हिंदी दिवस मनाया जाता है, लेकिन हमारे कई केंद्रीय मंत्री ऐसे हैं, जो एक शब्द भी भारतीय भाषाओं का नहीं बोलते। ऐसा नहीं है कि हिंदी नहीं बोल सकते या अपनी क्षेत्रीय भाषा नहीं बोल सकते। किंतु वित्तमंत्री श्री प्रणव मुखर्जी, गृहमंत्री श्री पी. चिदंबरम, एंटोनी आदि ऐसे मंत्री हैं, जो एक शब्द भी संसद या संसदीय वक्तव्य में देशी भाषा नहीं बोलते। इस परिस्थिति में हिंदी ही उपेक्षित हो गई है। संस्कृत का तो कहना ही क्या?

हिंदी, संस्कृत की योजनाबद्ध उपेक्षा :- जब हिंदी राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा के रूप में मान ली गई, उस समय केंद्रीय सरकार में वर्चस्व अंग्रेज़ी का ही रहा। हिंदी को राजभाषा बनाना भोले-भाले हिंदी भक्तों के हाथ में झुनझुना थमा देने जैसा था। सारा राजकीय कार्य अंग्रेज़ी में ही होता रहा। प्रसासनिक स्तर पर और समाचार मीडिया में अंग्रेज़ी का वर्चस्व जस की तस रहा, बल्कि ऊंचे तबके के लोग अंग्रेज़ी की ओर आकृष्ट होते चले गये और परिणाम हुआ हिंदी की उपेक्षा और अंग्रेज़ी का वर्चस्व-वर्धन।

हिंदी को उखाड़ने का एक और प्रयास

देश के दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन के पश्चात पाकिस्तान से लगती पश्चिमी सीमा तक पंजाब एक प्रखर हिंदी, हिंदू राज्य बन गया। उस समय पंजाब में ९० प्रतिशत विद्यार्थी हिंदी माध्यम से माध्यमिक परीक्षा देते थे। यह ९० प्रतिशत पंजाबी मातृभाषा और सिख समुदाय पर भी लागू होता था। श्री जवाहरलाल नेहरूजी ने ताड़ लिया कि यदि पंजाबी विशेषकर सिखों को पंजाबी भाषा को लोभ दिलाया जाए, तो पंजाब में हिंदी-हिंदू वर्चस्व नष्ट हो जाएगा और कांग्रेस की सरकार आसानी से बन पाएगी।

केंद्रीय सरकार ने पंजाब में हिंदी को उखाड़ने का सफल प्रयास किया। उसी का एक रूप बना सशस्त्र आतंकवाद, जिसे इंदिराजी ने भरपूर ढोया और स्वर्ण मंदिर सैन्य प्रवेश तथा इंदिराजी की निर्मम हत्या और दिल्ली का हिंदू, सिख जातीय संघर्ष, जो आज भी नासूर बना हुआ है, कुल का सामूहिक परिणाम हुआ हिंदी और संस्कृत की उपेक्षा। पंजाबी एक आंचलिक भाषा है।

पंजाब के इस उदाहरण ने हिंदी परिवार के बृहत्तर आयतन में दरारें पैदा कर दी हैं। केंद्र के निर्बल नेतृत्व और आंचलिक नेतृत्व की महिमा ने भोजपुरी, मैथिली, बुंदेलखंडी आदि का केस उपस्थित कर दिया है और उपेक्षा हिंदी की हो रही है।

भाषा का त्रिसूत्री नियम :- कहने को आज हाईस्कूल तक त्रिसूत्री नियम चालू है। इसमें राष्ट्रभाषा, अंग्रेज़ी और एक देशी भाषा की पढ़ाई स्कूलों में हो रही है। आज अंग्रेज़ी का वर्चस्व इतना बढ़ गया है कि तीनों भाषाओं में अंग्रेज़ी प्रथम स्थान पर

१२ वें सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के युवक सम्मेलन में
ओम प्रकाश त्यागीअध्यक्षीय भाषण

बहनों और भाइयों ! मैं १२ वें सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन की मॉरिशस स्थित स्वागत-समिति का हार्दिक आभारी हूँ कि उसने इस महत्वपूर्ण सम्मेलन का आयोजन कर मुझे उसके अध्यक्ष पद के लिए चुना। लघु भारत होने के नाते मॉरिशस संघ मेरी कल्पना का विषय बना रहा। आज उसका साक्षात्कार कर मुझे जितना हर्ष हो रहा है, उसका वर्णण करना मेरी वाणी की शक्ति से बाहर है। ऐसे सुंदर रमणिक व सम्पन्न देश में रहने वाले वास्तव में सौभाग्यशाली हैं।

बन्धुओं ! नवयुवकों की समस्या केवल एक देश की समस्या न होकर समूचे संसार की जटिल समस्या बनी है और प्रत्येक देश समस्या का समाधान ढूँढने के निमित्त प्रयत्नशील है। सत्य सनातन वैदिक धर्म इस समस्या का क्या समाधान उपस्थित करता है, यही इस सम्मेलन का मुख्य लक्ष्य है।

यह वैज्ञानिक युग है। इसमें पले नये युवक-युवतियाँ प्रत्येक बात को विज्ञान अथवा बुद्धिवाद की कसौटी पर कसकर ग्रहण करने के आदी हो गए हैं। इसलिए अंध-विश्वास पर आधारित धार्मिक व सामाजिक विश्वासों व परम्पराओं के प्रति उन्होंने विद्रोह कर दिया है। उनका विद्रोह अमरीका आदि देशों में अच्छी-बुरी सभी सामाजिक सीमाओं को लांघ गया और उसने एक नई हिप्पी संस्कृति को जन्म दे दिया है, जिसके कारण आज लाखों नवयुवक-युवतियाँ लक्ष्यहीन आवारों के रूप में संसार भर की खाक छानते फिर रहे हैं। इसमें दोष उनका नहीं, अपितु राष्ट्रों व समाज के उन कर्णधारों का है, जो देश-काल की बदली हुई परिस्थिति के अनुसार उन्हें सही दिशा न दे सकें। वे ऐसा करने में इसलिए असमर्थ रहे क्योंकि वे अंधविश्वास पर आधारित धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं से अपने को मुक्त न कर सके। वैदिक धर्म की यह विशेषता है कि इसने देश-काल परिस्थिति के अनुसार वैदिक धर्म के मूल सिद्धांतों पर आधारित समाज को समय-समय पर विभिन्न स्मृतियों के रूप में व्यवस्थाएं दी, जिन्होंने समाज के प्रत्येक अंग को सदैव नवीन स्फूर्ति व प्रेरणा प्रदान की। यही कारण है कि हज़ारों वर्ष के ऐसे दासता काल में जब विदेशी शासकों ने इसे समूल निगल जाने का भरसक प्रयत्न किया, वैदिक धर्म की इसी विशेषता ने आर्य जाति को उस असह्य संकट काल में भी विजयी बनाकर निकाल दिया। भारत ही नहीं, अपितु मॉरिशस, फिजी, गुयाना आदि देशों में रहने वाले वैदिक धर्मी बन्धु भी इस बात के साक्षी हैं। अतः जो राष्ट्र अपनी नवयुवक शक्ति का उत्थान चाहते हैं, उन्हें अंध-विश्वास पर आधारित धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं को तिलांञ्जलि देकर देश-काल परिस्थिति का ध्यान करते हुए बुद्धिवादी धार्मिक व सामाजिक व्यवस्थाओं को उपस्थित करना होगा या अपनी मान्यताओं को बुद्धिवाद के बल पर तथ्य व उपयोगी सिद्ध करना होगा। उदाहरणार्थ, यदि आर्य समाजी, पौराणिक, मुस्लिम, ईसाई आदि बन्धु यह चाहते हैं कि उनके बच्चे उनकी परम्परानुसार सन्ध्या,-हवन, मूर्तिपूजा, नमाज़, गिरजा में पापोद्धार के निमित्त जाना-आदि करें, तो ऐसा वे डण्डे के बल पर नहीं करा सकेंगे। अपितु जब तक वे युक्तियों के द्वारा इनकी आवश्यकता व उपयोगिता सिद्ध नहीं कर देंगे, तब तक वे उनसे ऐसा नहीं करा सकते। ऐसा प्रतीत होता है कि संसार में अधिकांश देशों व समाजों ने युवक-शक्ति से निराश होकर उनकी उपेक्षा करना प्रारंभ कर दिया है और उसे अपने भाग्य पर छोड़ दिया है। उनकी यह नीति घातक है। इस प्रकार वे अपना और अपने देश का भविष्य अन्धःकारमय बना रहे हैं।

किसी भी परिवार, समाज या राष्ट्र का भविष्य उसके नवयुवक-नव युवतियों पर आधारित होता है। इसलिए राष्ट्र-निर्माण का प्रमुख अंग नवयुवक- नवयुवतियों का निर्माण है। परंतु दुर्भाग्य वश आज भौतिक साधनों व भोग सामग्रियों अथवा भौतिक उत्थान को ही राष्ट्र-निर्माण माना जा रहा है और नवयुवक शक्ति की संसार के प्रत्येक भाग में उपेक्षा हो रही है। यही कारण है कि आज युवक-शक्ति अधार्मिकता, नास्तिकता, उच्छृंखलता और चरित्रहीनता के गर्त में गिरती चली जा रही है।

एक परिवार या राष्ट्र में नवयुवकों का क्या स्थान है, इसका रूपक पुराणों में इस प्रकार प्रदर्शित किया गया है कि जिस परिवार अथवा जिस माता-पिता की सन्तान नहीं होती, उनका नरक से उद्धार होकर उन्हें स्वर्ग प्राप्ति नहीं होती। काल्पनिक स्वर्ग-नरक की दृष्टि से यह मान्यता कहाँ तक सत्य है यह तो मैं भी नहीं जानता, परन्तु नरक का आगमन वृद्धावस्था के रूप मे अवश्य होता है। जबकि उसकी इंद्रियाँ शक्ति विहीन कबूतर की भाँति हो जाती हैं। उस नारकीय अवस्था से सरलतापूर्वक पार कराने की क्षमता व भावना केवल अपनी संतान में ही होती है। धन-सम्पत्ति व नौकर-चाकरों में नहीं होती। नवयुवक का जो महत्व एक परिवार में हैं, वही महत्व उसका राष्ट्र में होता है। जिस समाज अथवा राष्ट्र में नवयुवक शक्ति का ह्रास हो जाता है, उसका भविष्य भी अंधःकारमय होता है।

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण द्वितीय विश्वयुद्ध में मिला। जब हिटलर की फौजों के द्वारा एक सप्ताह के अंदर ही फ्रांस का पतन हो गया। तब एक प्रेस प्रतिनिधि ने फांस के नेता मार्शल पेतां से पूछा कि जब जर्मनी के समान फ्रांस के पास भी अस्त्र-शस्त्र व सेना थी, तो उनके देश का पतन इतने शीघ्र क्यों हुआ? इसका उत्तर देते हुए मार्शल पेतां ने कहा कि हिटलर की फौजों में व्यायाम शालाओं में नित्य व्यायाम

भारतीय भाषाओं का ये अपमान कब तक सहेगा हिंदुस्तान?

पिछले चार दिसंबर से संप्रग अध्यक्ष सोनिया गांधी के निवास १० जनपथ, नई दिल्ली पर धरना दे रहे भारतीय भाषाओं के तीन दीवाने श्री श्याम रुद्र पाठक, श्रीमती गीता मिश्र तथा श्री विनोद पांडे भारतीय प्रजातंत्र, भारतीय संविधान तथा भारतीय न्याय प्रणाली से जुड़े कुछ अहम सवाल उठा रहे हैं। इनसे मिलने के लिए मुझे नई दिल्ली के तुगलक रोड थाने में जाना पड़ा, क्योंकि इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर न तो सोनिया गांधीऔर न ही उनकी सरकार किसी प्रकार का आश्वासन दे पा रही है। हालाँकि वफ़ादार पुलिस, सत्याग्रहियों नियमपूर्वक पकड़कर थाने में बंद तो कर सकती है।

यह दुःख की बात है कि आज़ादी के पैंसठ वर्षों पश्चात भी दुनिया के सबसे बड़े प्रजातंत्र भारत के सर्वोच्च न्यायालय में भारत की किसी भी भाषा में काम-काज पर पूर्ण प्रतिबंध है।

२०११ की जनगणना के अनुसार देश के १२१ करोड़ लोगों में से केवल ढाई लाख लोगों के लिए अंग्रेज़ी प्रथम भाषा है। नौ करोड़ एवं चार करोड़ लोगों के लिए यह क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय भाषा है। हिन्दी को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय भाषा के रूप में इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या ४५ करोड़, १० करोड़ एवं तीन करोड़ है। अगर उन सभी लोगों की संख्या को मिलाकर देखें, जो अंग्रेज़ी को प्रथम, द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप में इस्तेमाल करते हैं, तो भी यह देश की आबादी का केवल १२ प्रतिशत से कम होता है। क्या भारत का सर्वोच्च न्यायालय भारत के बाकी ८८ प्रतिशत लोगों के लिए नहीं है?

अंग्रेज़ी को प्रथम भाषा के रूप में इस्तेमाल करने वालों की संख्या तो एक प्रतिशत का पचासवाँ हिस्सा है, परंतु अंग्रेज़ी को इस्तेमाल कर सकने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग तीन प्रतिशत है। भारत के केवल चार उच्च न्यायालयों- उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान मेंअंग्रेज़ी के अतिरिक्त हिन्दी में कार्य की अनुमति है। बाकी देश के सत्रह उच्च न्यायालयों में एवं सर्वोच्च न्यायलय में भारतीय भाषा में कामकाज पर पूर्ण प्रतिबंध हमारी आज़ादी का मखौल है और जनतांत्रिक मूल्यों का हनन है। सम्प्रति इन न्यायालयों में देश की अधिसंख्य जनता '९७ प्रतिशत' स्वयं अपनी बात नहीं कह सकती। इनके द्वारा रखे गये वकील उनके मुकदमे के बारे में क्या बोल रहे हैं, यह भी वे समझ नहीं सकते।न्यायाधीश भी जनता की भाषा में अपना निर्णय नहीं दे सकते। अंग्रेज़ी माध्यम से बहस कर सकने में सक्षम वकील ही इन न्यायालयों में वकीलत कर सकते हैं। इससे न केवल भारतीय भाषा के माध्यम से पढ़े वकीलों को विकास के अवसर से वंचित किया जाता है, वरन जनता की भी वकील पाने की सुविधा सीमित होती है, जिससे कि मुकदमे का खर्च बढ़ता है।

सर्वोच्च न्यायालय एवं १७ उच्च न्यायालयों में अंग्रेज़ी को अनिवार्य भाषा के रूप में रखना 'स्वराज' की अवधारना के खिलाफ है, जबकि 'स्वराज' हमारे स्वतंत्रता-आंदोलन का पथ-प्रदर्शक सिद्धांत एवं अति-वांछित उद्देश्य था। राष्ट्रभाषा का इस्तेमाल महात्मा गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण अवयव था। अतः इन न्यायालयों में भारतीयभाषा के इस्तेमाल पर प्रतिबंध हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के आदर्शों का उल्लंघन है, जबकि संविधान के अनुच्छेद ५१ (क) के तहत भारत के प्रत्येक नागरिक का यह मूल कर्तव्य है कि वह स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेषित करने वाले उच्चादर्शों को हृदय में संजोए रखेऔर उनका पालन कर हमारे संविधान की उद्देशिका में भारत को एक समाजवादी लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने तथा उनके समस्त नागरिकों को प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने की घोषणा की गई है, परंतु केवल तीन प्रतिशत संभ्रांत लोगों को ज्ञान एवं विदेशी भाषा को सर्वोच्च न्यायालय (एवं उच्च न्यायालयों) की अनिवार्य भाषा के रूप में रखना इन उद्देश्यों का हनन है। यह हमारे समता के अधिकार और विकास के अवसरों में समता के मूल अधिकारों का भी उल्लंघन है। संविधान के अनुच्छेद ३५१ के तहत केंद्र सरकार को हिन्दी भाषा के विकास के लिए दिये गये निर्देश का भी यह सरासर उल्लंघन है।

यह केवल न्यायालयों से जुड़ी समस्या नहीं है- हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, स्वाभिमान एवं न्याय की बुनियाद पर चोट करने वाला षड़यंत्र है। इसे बदलने के लिए राजनैतिक इच्छा पैदा हो, तो महज़ बहुमत से पारित प्रस्ताव द्वारा भारतीय संसद ६५ वर्षों से चली आ रही दयनीय विसंगति को दूर कर सकता है।

क्या हम सभी उक्त आशय का पत्र, प्रस्ताव अपने सांसदों एवं राजनैतिक पार्टियों को, नेताओं को तत्काल भेजकर आवश्यक दबाव बनाएंगे? क्या साथी श्याम रुद्र पाठक, गीता मिश्र और विनोद पांडे की माँग आम जनता की माँग बनकर भारतीय संसद भवन में गूँज सकेगी? क्या यह तुमुल ध्वनि गणतंत्र दिवस २६ जनवरी २०१३ से पहले भारतीय गगनमंडल को भेदती सुनाई पडेगी?

- स्वामी अग्निवेश

आतंकवाद का रंग है बस काला

हमारे गृहमंत्री श्री सुशीलकुमार शिंदे ने दुबारा बर्रे के छत्ते में हाथ डाल दिया। क्या हमारे हर गृहमंत्री को यह खसलत तंग करती है? डेढ़-दो साल पहले तत्कालीन गृहमंत्री चिदंबरम ने भी भगवा आतंकवाद का जुमला उछाला था और अपनी भद पिटवाई थी। अगर यही बात कांग्रेस या कम्युनिस्ट पार्टी का कोई दिग्गज नेता भी कह देता, तो लोग उस पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। यह माना जाता कि यह वोट-बैंक की राजनीति है। अल्पसंख्यकों को पटाने का एक पैंतरा है, लेकिन यही बात किसी गृहमंत्री के मुँह से निकलती है, तो इसमें से आग की-सी लपट उठती है। इसलिए शिंदे ने मुँह खोला नहीं, कि संघ और भाजपा के प्रवक्ता ने आसमान सिर पर उठा लिया। श्री शिंदे ने श्री चिदंबरम को भी मात कर दिया। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा कि भाजपा और संघ के प्रशिक्षण केंद्रों में आतंकवाद का पाठ पढ़ाया जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसा उन्हें गृहमंत्रालय की कुछ रपटों से पता चला है। इतना सुनते ही भाजपा ने उन पर आग बरसाई, तो वे चिदंबरम के स्तर तक उठे और संयत हो गए। उन्होंने कहा कि मैंने हिंदू आतंकवाद नहीं कहा। वह भगवा आतंकवाद है और ऐसी बात कई अखबारों में भी लिखी गई थी। गृहमंत्री ने अपने कथन को सुधारा, लेकिन कांग्रेसी नेताओं उनके मूल बयान का डंटकर समर्थन कर दिया।

गृहमंत्री पहले भी ऐसी असावधानी के शिकार हुए हैं और उन्होंने फिर सफाइयाँ पेश की हैं। उनसे आशा की जाती है कि वे अपने पद की महत्ता को ध्यान में रखे बगैर कोई बयान ना दें। वे सिर्फ कांग्रेस के ही नहीं, पूरे देश के गृहमंत्री हैं। यहाँ प्रश्न यह भी उठता है कि ऐसा क्यों होता है? इसका एक कारण तो बिल्कुल स्वाभाविक है। जो भी राजनीति करता है, वह 'छपास' और 'दिखास' के लिए तड़पता रहता है। अखबारों में किसी तरह नाम छपता रहे और टीवी चैनलों पर चेहरा दिखता रहे, यह हर नेता की मजबूरी है। इसलिए कई बार जान-बूझकर बिल्कुल अटपटे, बेढ़ब और उत्तेजक बयान दे दिये जाते हैं। कभी-कभी लेने के देने पड़ जाते हैं। हमारे राजनीतिक दलों के अतिसंयत और सुनियंत्रित प्रवक्ताओं को भी इस खसलत के कारण घर बैठना पड़ जाता है। इसका दूसरा कारण यह भी है कि छोटे नेता अपने बड़े नेताओं को खुश करने के लिए भी इस तरह के बयान झाड़ देते हैं। उनके बड़े नेता तो इतने सावधान हैं कि अपना मुँह खोलने से पहले दस सलाहकारों से विचार-विमर्श करते हैं और उसके बावजूद अपना भाषण किसी न किसी राजनीतिक बाबू से लिखवाकर लाते हैं। शीर्ष नेतागण अभिनेताओं की तरह लिखे हुए या रटे हुए 'डायलॉग्स' बोलने में भी नहीं झिझकते। लेकिन छुटभैया लोग अपनी मशीनगन दनादन चलाने से नहीं चूकते। चैनलों और अखबारों की पौबारह इन्हीं नेताओं की वजह से बनती रहती है। 'बड़े मियाँ-तो-बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्ला।

आश्चर्य यह है कि शिंदे के मूल बयान कुछ ज़िम्मेदार कांग्रेसी नेताओं ने डँटकर समर्थन कर दिया है। यानि वे भाजपा और संघ को हिंदू आतंकवाद के लिए वाकई ज़िम्मेदार मानते हैं। जब आसीमानंद और प्रज्ञा का मामला तूल पकड़ा था, तो भाजपा, संघ और विश्व हिंदू परिषद ने भी उनके कृत्यों की स्पष्ट निंदा की थी और आज भी वे हर प्रकार के आतंकवाद का विरोध करते हैं। कांग्रेस के जो नेता हिंदू या भगवा आतंकवाद की बात उछालते हैं, वे क्या यह नहीं जानते कि उनकी इस नासमझी का खामियाज़ा कांग्रेस या देश दोनों को भुगतना पड़ सकता है। यदि हिंदू और भगवा शब्दों को आतंकवाद के जोड़ने के कारण वे अल्पसंख्यकों के वोट को लुभा सकते हैं, तो क्या इसका तार्किक दुष्परिणाम यह नहीं होगा कि बहुसंख्यक मतदाता कांग्रेस से बिदकने लगेंगे? अभी तक कांग्रेस मुसलमानों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल नहीं हुई है। ऐसे में वह हिंदू वोट क्यों खोना चाहती है ? इसके अलावा आतंकवाद 'इस्लामी' और 'हिंदू' नाम देना कहाँ तक उचित है? इस्लाम तो आतंकवाद का बिल्कुल भी समर्थन नहीं करता। उसके तो नाम का ही अर्थ है सलामती और शांति का धर्म। जहाँ तक हिंदुत्व का प्रश्न है, जो धर्म 'आत्मवत्र सर्वभूतेषू' मान है, यानि सभी प्राणियों में स्वयं को द ा है, वह आतंकवाद कैसे फैला सकता है? आतंकवाद की ना तो कोई जात है ना ही मज़हब। जिन लोगों का नाम लेकर आतंकवादी हिंसा करते हैं, अगर उन लोगों से पूछे, तो उन्हें वे बिल्कुल रद्द कर देंगे। अपने आपको जिहादी कहने वाले आतंकवादी क्या जिहाद का मतलब भी जानते हैं? जिहादी का मतलब होता है जितेंद्रिय। आतंकवादी तो कायर होता है। वे वीरों की तरह लड़ते नहीं, हमला करते हैं और भाग जाते हैं। वे क्रांतिकारी भी नहीं होते। हमारे स्वाधीनता सेनानी कभी निहत्थी जनता पर हमला नहीं करते थे। पकड़े जाने पर झूठ बोलकर या कायराना बहाना बनाकर अपनी जान बचाने की कोशिश नहीं करते थे। ऐसे कायर लोग खुद को जिहादी कहें या साधु-महात्मा कहें, वे अपने वर्ग या समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करते। इस लिए इन सिरफिरों और पथभ्रष्ट लोगों के बहाने की भी व्यापक जन समुदाय के चेहरे पर काला टीका लगा देना कहाँ की बुद्धिमानी

है। इसके अलावा अपने ही देश के कुछ बहके हुए लोगों के कारण हम पूरे देश को क्यों बदनाम करना चाहते हैं? आज यदि हिंदू या भगवा आतंकवाद शब्द दुनिया के लोगों की ज़ुबान पर चढ़ जाए, तो उसका परिणाम क्या होगा? भारत बदनाम होगा। भारत कतार में बैठ जाएगा। जिसमें पाकिस्तान बैठा है। पाकिस्तानी को इस्लामी आतंकवाद का जनक माना जाता है, तो भारत को हिंदू आतंकवाद का जनक माना जाने लगेगा। लष्करे तैय्यबा के सरगना हाफ़िज़ सईद के हाथ में शिंदने एक नया हथियार पकड़ा दिया है। सईद का कहना है कि आतंकवादी राष्ट्र पाकिस्तान नहीं, हिंदुस्तान है। पाकिस्तान तो अपने आतंकवाद को निर्यात करता है। उसने आतंकवाद को बनाया ही था निर्यात के लिए। भारत उसे कहाँ निर्यात करेगा? भारत में अगर हिंदू आतंकवाद फैल गया, तो वह सबसे ज्यादा किसका विनाश करेगा? भारतीयों का? और भारतीयों में हिंदुओं का। दुनिया के सारे आतंकवादियों का इतिहास पढ़ लीजिए। कश्मीरी आतंकवादी सबसे ज्या किन्हें मार रहे हैं। और तालिबान ? उनके शिकार सबसे ज्यादा मुसलमान ही होते हैं। श्रीलंका के तमिल आतंकवादियों ने जितने सिंहली नेतों को मारा, उनसे ज्यादा तमिल नेताओं को मारा। अमेरिका के उग्रवादी ईसाई क्लू क्लस क्लान आतंकवादियों ने ईसाइयों को ही मारा। हमारे बंगाल के माओवादी सबसे ज्यादा वामपंथियों को ही मारते हैं। हिंसा का विरोध करने वाले लोग आतंकवादियों का पहला निशाना बनते हैं। भारत के अधिसंख्य लोग हिंसा विरोधी हैं। 'हिंदू आतंकवाद' शब्द गढ़कर आप भारत को पाकिस्तान क्यों बनाना चाहते हैं? आतंक कोई भी करें, चाहें वह हिंदू हो या मुसलमान, ईसाई हो या सिख उसे उसके मज़हब से मत जोड़िये। वह उसका शुद्ध व्यक्तिगत फैसला है। यह ठीक है कि आतंकवादी अपने फैसले को मज़हब या मुल्क या जाति से जोड़ने की पूरी कोशिश करेगा, लेकिन इस कुचेष्टा में हम उसका साथ क्यों दें? किसी भी आतंकवाद को किसी मज़हब से जोड़कर देखने का अर्थ है उस आतंक को प्रतिष्ठा और समर्थन देना। आज जरूरी है कि आतंकवाद को पार्टी चश्मे से न देखा जाए। पार्टी चश्मे से देखेंगे, तो वह भी भगवा दिखेगा। कभी हरा, कभी लाल और कभी तिरंगा भी। यदि उसे राष्ट्रीय चश्मे से देखेंगे, तो उसका भी रंग दिखेगा। वह है, काला।

संस्कृत की उपेक्षा अक्षम्य राष्ट्रीय अपराध..

जगह पा रही हैं। हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाएं गौण हो रही हैं। आगे जब हिंदी या बांग्ला प्रथम भाषा थी, तो संस्कृत का अपना एक अलग महत्व था। भारतीय मूल की सभी भाषाओं की जननी संस्कृत है।

संस्कृत शक्ति की भंडार :- भारतीय मूल की जितनी भाषाएँ हैं, उन सबका मूल संस्कृत है। संस्कृत का शब्द भंडार एक अक्षय कोष है। संस्कृत में लगभग दो हज़ार धातु हैं। एक-एक धातु से अनगिनत शब्द बनते हैं।

कम्प्यूटर विज्ञान से संस्कृत को कम्प्यूटरीकृत भाषा के रूप में ग्रहण करने की योजना बनाई थी। भारतीय मूल भी सभी भाषाओं का शक्तिभंडार संस्कृत ही आता है। आज भारतीय मूल की इन भाषाओं का प्रयोग बढ़ेगा, तो संस्कृत की उपादेयता अपने आप बढ़ जाएगी। किंतु फार्मूला बड़ा सीधा सा अपनाया गया है। भारतीय भाषाओं की महिमा घटाई जाए, अंग्रेज़ी की महिमा बढ़ाई जाय, प्रशासन में अंग्रेज़ी का वर्चस्व बढ़ाया जाए, तो संस्कृत अपने-आप समाप्त होती है।

संस्कृत की रक्षा भारतीयता की रक्षा है। यदि संस्कृत हमारे हाथ से निकल गई, तो हम वेदों से उपनिषदों से और संसार के सर्वाधिक प्राचीन ज्ञान के भंडार से दूर हो जाएंगे। भारतवर्ष की भारतीयता के प्रतीक संस्कृत के महाकवि कालीदास, भवभूति आदि हमसे दूर हो जाएंगे। विश्व साहित्य की अपेक्षा निधि से संपर्क में रहना है, तो राजनीतिक और शासनिक मानदंडों से ऊपर उठकर संस्कृत की रक्षा करनी है।

भाषा न रही, तो रामायण, महाभारत, गीता, गायत्री सब कुछ हमारे लिए दूर हो जाएगा और हम अपनी भारतीयता की गरिमा खो बैठेंगे। अतः हिंदी और संस्कृत दोनों को बचाने की राष्ट्रीय योजना बनाई जानी चाहिए।

---

१२ वें सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के युवक सम्मेलन में ओम प्रकाश त्यागीअध्यक्षीय भाषण ......

करने वाले नवयुवक थे, जबकि हमारी सेना में युवतियों के पीछे चक्कर काटने वाले मजनूं थे।

आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने युवक शक्ति के महत्व को अनुभव करते हुए ही युवकों के शारीरिक, मानसिक व सामाजिक उत्थान-कार्य करने के निमित्त कुमार सभाओं को प्रोत्साहन दिया। परन्तु दुर्भाग्यवश आर्य समाजों से जितना सहयोग इस महान कार्य को मिलना चाहिए था, उतना नहीं मिला। परिणाम स्वरूप बहुत से आर्य समाजों में नवयुवकों का अभाव खटक रहा है। नवयुवकों के प्रति उनकी यह उपेक्षा घातक है। वास्तव में आर्य वीर दल प्रत्येक आर्य समाज का अनिवार्य अंग होना चाहिए।

समाज की सही प्रगति के लिए होश और जोश दोनों की आवश्यकता है। होश उन वृद्धजनों के पास होता है, जिन्होंने अपने खून-पसीने से आर्य समाज को खड़ा किया है, परंतु वृद्धावस्था में इंद्रियाँ शिथिल हो जाने से उनके पास कार्य करने के लिए जोश का अभाव होता है।

इसलिए वृद्ध और नवयुवक दोनों की समाज को आवश्यकता है। वृद्धों का कर्तव्य है कि वह कुर्सी का प्रलोभन छोड़कर नवयुवकों को आगे लाने के प्रयत्न करें और नवयुवकों का कर्तव्य है कि वह वृद्धजनों का यथोचित मान करते हुए उनकी सम्मति व अनुभव का लाभ उठाएं। इस प्रकार होश और जोश का समन्वय ही समाज का सही स्वरूप है और समाज के उज्वल भविष्य का प्रतीक है।

इटली में
धर्माचार्यों व ळ.8 देशों के राष्ट्राध्यक्षों की संगोष्ठी

ळ – 8 देशों के राश्ट्राध्यक्षों की जुलाई 2009 में इटली में होने वाली ऐतिहासिक बैठक के अवसर पर 15 से 17 जून 09 तक इटली की राजधानी रोम में विभिन्न धर्मों के धर्माचार्यों की चतुर्थ संगोश्ठी **(Summit)** में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं सर्वधर्म संसद के नेता स्वामी अग्निवेश जी एवं उपप्रध ाान स्वामी आर्यवेश जी ने भाग लिया। संगोष्ठी का उद्घाटन इटली के राश्ट्रपति महामहिम **Giorgio Napolitano** ने किया। संगो ठी की सम्पूर्ण व्यवस्था इटली के विदेश मन्त्रालय द्वारा की गई तथा आतिथ्य का दायित्व **Community of Saint Egedio** ने सम्भाला।

"वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को मूर्तरूप देने के लिए दुनिया के धर्माचार्य आगे आये" –स्वामी अग्निवेश

'जब तक विश्व में अस्त्र–श्स्त्र के निर्माण में कटौती एवं व्यापार पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जायेगा–विश्व शान्ति का स्वप्न साकार नहीं हो सकेगा।' – स्वामी अग्निवेश

ळ–8 देशों को अपने देश के कि ा क्षेत्र में सब्सिडी समाप्त करने, परमाणु हथियारों पर प्रतिबन्ध लगाने एवं मांसाहार एवं नशाखोरी पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए तुरन्त कदम उठाने होंगे।

–स्वामी अग्निवेश

19 जून 2009, ळ.8 देशों के राष्ट्राध्यक्षों की इटली में जुलाई 2009 में होने वाली ऐतिहासिक बैठक से पूर्व इटली के विदेश मन्त्रालय द्वारा आहूत की गई र्माचार्यों की संगो ठी में भारत की ओर से सर्वधर्म संसद के संस्थापक एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश एवं उपाध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने विशे ा रूप से भाग लिया। इस महत्वपूर्ण संगो ठी के उद्घाटन से पूर्व दुनिया के विभिन्न देशों से पधारे धर्माचार्यों को वि ोश व्यवस्था एवं सुरक्षा के साथ इटली के भूकम्प पीड़ित हर ला अकिला ले जाया गया जहाँ 6 अप्रैल 2009 को भयंकर भूकंप आया था। वहां सामूहिक रूप से प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया था। भूकम्प ग्रस्त ाहर के ध्वस्त क्षेत्र का अवलोकन कर तथा भूकम्प पीड़ित जनसामान्य के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करने के उपरान्त सभी धर्माचार्य वापिस रोम के प्रसिद्ध होटल । सकतवअंदकप वापस आ गये।

सायं चार बजे इटली के रा ट्रपति महामहिम Giorgio Napolitano के Quirinale Palace में एक औपचारिक मुलाकात एवं परिचयात्मक बैठक आयोजित थी। महामहिम रा ट्रपति महोदय ने सभी धर्माचार्यों का अभिवादन किया तथा आशा व्यक्त की कि ध ार्माचार्यों की बैठक में ठोस निर्णय लिए जा सकेंगे जिससे ळ–8 देशों को दिशा मिल सके। महामहिम रा ट्रपति स्वामी अग्निवेश जी से मिलने उनकी सीट तक आये तथा गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत किया। स्वामी अग्निवेश ने अपनी पुस्तिका Applied Spirituality उन्हें भेंट की।

इस संगो ठी का विधिवत प्रथम सत्र रोम के प्रसिद्ध महल Villa Madama में सायं 5.30 बजे प्रारम्भ हुआ जो रात्रि 8 बजे तब चला। यहीं पर सायंकालीन भोजन की व्यवस्था की गई थी। इस प्रथम सत्र में उद्घाटन भा ाण तथा विद्वान प्रो0 एन्ड्रिया रिकार्डी द्वारा ज्ञमल दवजम ककतमे दिया गया।

17 जून 2009 को प्रातः 9.30 बजे विदे ा मन्त्रालय के कान्फ्रेंस हॉल में संगोष्ठी का दूसरा सत्र प्रारम्भ हुआ जिसमें अन्य धर्माचार्यों सहित स्वामी अग्निवेश जी का महत्वपूर्ण भाशण हुआ। स्वामी जी ने सभी धर्माचार्यों को ाुरू करते ही यह कहकर ओ चर्यचकित कर दिया कि दुनिया की कुल आबादी का आधा हिस्सा महिलाओं का है किन्तु आज यहां धर्माचार्यों की संगोश्ठी में इनकी उपस्थिति नगण्य है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को भी धर्माचार्य होने का अधिकार मिलना चाहिए तथा जीवन के हर क्षेत्र में उन्हें समान अवसर एवं सम्मान मिलना चाहिए। ळ–8 देशों में कृशि के लिए दी जा रही सब्सिडी समाप्त करने, ाराब एवं तम्बाकू के उत्पादन एवं सेवन पर प्रतिबन्ध लगाने तथा विकासशील व अविकसित देशों को ऊपर उठने का अवसर देने के सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से वर्तमान

में सभी संगठित धर्म विविध विकृतियों के शिकार हैं उसके लिए आवश्यक है कि सभी धर्मों में प्रचलित रूढ़िवाद, गुरूडम, पाखण्ड एवं अवतारीय व्यवस्था हम सबके लिए एक चुनौती है।

अपने सम्बन्ध में स्प ट करते हुये स्वमी जी ने बताया कि इस संगो ठी में सम्मिलित स्वामी आर्यवेश जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान भी है तथा मैं स्वयं किसी तथाकथित संगठित धर्म के अनुयायी नहीं हैं। हम वेदों को मानते हैं तथा वेदों में किसी वर्तमान प्रचलित धर्म का वर्णन नहीं है। वेद न तो हिन्दू न मुसलमान और न सिक्ख औन न ईसाई है। आर्य किसी मज़हब को नहीं मानते।

अग्निवेश जी ने जिस बात पर सबसे अधिक ज़ोर दिया वह था कि विश्व पर्यावरण संकट के लिये सबसे अध्िाक जिम्मेदार मांसाहार उद्योग पर पूर्ण प्रतिबंध की मांग। स्वामी अग्निवेश ने यू.एन.के. आंकड़े देकर बताया कि किस तरह भूतल यातायात, समुद्री यातायात एवं वैमानिक यातायात इन तीनों से उत्पन्त प्रदू ाण को जोड़ लिया जाये तो भी अकेली मीट इन्डस्ट्री द्वारा उत्पन्न प्रदू ाण इन तीनों से अधिक है। साथ ही दुनियाँ में भूख और गरीबी का भयावह चित्र पेश करते हुए उन्होंने कहा कि आज 25,000 मासूम बच्चे प्रतिदिन भूख से तड़प तड़प कर दम तोड़ देते हैं और दूसरी तरफ मांस उद्योग द्वारा एक किलो मांस उत्पादन के लिये कम से कम 12 किलो अनाज पशु को खिलाया जाता है। इससे बड़ा क्रूर और भददा मज़ाक क्या हो सकता है? (पूरे सम्मेलन संगो ठी में केवल अग्निवेश और आर्यवेश ही पूर्ण   ााकाहारी थे, बाकी सभी जो मांसाहार पर टूटकर पड़ते थे उन्हें स्वामी जी के उपरोक्त उदगार बहुत भारी लग रहे थे) स्वामी जी ने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से अपनी बात रखी तथा लोगों ने करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया।

दोपहर बाद दो दिवसीय संगोि ठ का समापन हुआ तथा एक प्रस्ताव को विधिवत पास कर के ळ–8 देशों की जुलाई में आहूत बैठक में भेजने के लिए अन्तिम रूप दिया गया। इस सत्र में स्वामी अग्निवेश जी ने पुनः अपने सुझाव दोहराये तथा पुरजोर तरीके से मांग की आज विश्व में आई आर्थिक मंदी को दूर करने के लिए स्विट्जरलैण्ड जैसे देशों में अवैध रूप से जमा धनराशि को जब्त किया जाये और भारत जैसे विकसित देशों को लौटाया जाये। उन्होंने ऐसे बैंकों को लूटेरों की संज्ञा दी तथा संगो ठी आयोजन के लिए इटली सरकार के विदेश मन्त्रालय का तथा अन्य अनेक संगठनों का आभार भी व्यक्त किया।

इस दो दिवसीय संगो ठी में मुख्यरूप से जिन धार्मिक नेताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये उनमें सर्वश्री Abuna Paulos, Patriarch of Ehiopian Orthodox Church. Vincenzo Paglia, President of Commission for Ecumenism and Dialogue of Italian Bishops Conference, Jean Lovis Tauran, Cardinal, President of the Pontifical council for inter religious dialogue, Andrea Riccardi, Professor of contemporary History Roma University, Rev. Aram 1, Lebanon, Rabbi Morelechai Piron, Israel, Prof. Dott. Din Syamsuddin Indonesia, Nichiko Niwano, Japan, Franco Frattini, Italian Minister of Foreign Affairs, George Riabykh, Moscow, Russia, Nikolaus Schnider, EKD Germany, William F. Vendley, WCRP, USA, Mrs. Mariavoce, Rev. Richard Clarke, Ireland, Rev. James T. Christie, Canada, His Eminence Emmanual, France, Rev. Fu Xian Wei, China, Fr. Augustin Gheorgue, Romania, HE. Hans Henning, Horstmann, Germany, Fr. Leon Lemmens, Belgium, Prof. Mohammad Amine Smaili, Morocco, H.E. Miguel Viechis, Mexico, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

बड़े उत्साह के वातावरण में संगो ठी सम्पन्न हुयी तथा भवि य में इसी तरह विश्व की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए परस्पर मिलते रहने का संकल्प भी

सभी ने लिया।

विदित हो कि संगोि ठत से तीन दिन पूर्व 13 से 15 जून 2009 तक स्वामी अग्निवेश जी व स्वामी आर्यवेश ने स्विटजरलैण्ड में श्री डंतबमस त्मल के साथ उनके गांव थ्मेबीमस में विशे ा चिन्तन के लिए समय लगाया। कई सत्र में हुयी चर्चा बड़ी ही लाभदायक रही तथा ए–4 घो ाणा पत्र की समीक्षा भी की गई। श्री डंतबमस त्मलए उनकी पत्नी श्रीमती च्नसपदम एवं उनके पुत्र श्री स्नबपमद ने आत्मीयता पूर्ण आतिथ्य प्रदान किया तथा अपने गांव में योग निकेतन प्रारम्भ करने की मंशा प्रकट की। इनके अतिरिक्त मिशेल एवं मारी, श्री थामस प्रभ ति विद्वानों के साथ भी विचार विमर्श हुआ। श्री मार्सल रे और उनका परिवार पूर्ण ाकाहारी है– मांसाहार एवं मदिरा सेवन आदि का विरोधी होने के साथ योग आदि में बेहदरूचि के साथ आल्प्स पर्वत के उत्तुंग श्रेणियों में अपना ''सूर्य कुटीर'' नामक निवास स्थल बनाकर साधना–सेवा में रत है। बीच–बीच में भारत आते है और वैदिक मान्यताओं के अनुरूप अपने विचारों को ढाला हुआ है। धर्म के नाम पर चल रहे सभी धर्म सम्प्रदायों के, उनके धर्म गुरुओं के, उनके कर्मकाण्डों के उनकी ाास्त्रीय मान्यताओं के ऐसे ही प्रखर आलोचक हैं जैसे कोई महि िदयानन्द से प्रेरित विद्वान हो।

(पृष्ट क्र. २ का शेष)

प्राप्त नहीं की है, बल्कि गूढ़ और निर्लज्ज कूटनीतिक युक्तियों से यहाँ अपने प्रभुत्व का जाल फैलाया है। ब्रिटिशों को मात देने के लिए भारतवासियों से कुछ नेता उन्हीं के चिन्तन की वकालत कर रहे थे, वह इसके लिए उपयुक्त नहीं था। दूसरी ओर, निरा आतंकवाद भी अपने आप में उचित नहीं था क्यों कि वह भारत की मूल परंपरा के प्रतिकूल था। लाला लाजपतराय का कहना था कि आज का भारतीय राष्ट्रवाद ब्रिटिश शासन को चुनौती देने के लिए पूरी तरह समर्थ और तैयार है। राष्ट्रवाद शहीदों के रक्त से पुष्ट होता है। अत्याचार और दमन उसे और भी उत्तेजित कर देते हैं। सच्ची बात यह है कि अंग्रेज़ तानाशाहों ने ही भारतीय राजनीति में आतंक और प्रतिहिंसा की गतिविधियों को जन्म दिया है।

लाला जी ने स्वयं अपने प्रयासों से शिक्षा क्षेत्र में अतुलनीय योगदान किया। लाला जी छुआछूत के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने आर्य समाज के स्कूलों और गुरुकुलों में बिना किसी भेदभाव के हरिजन छात्रों के प्रवेश की व्यवस्था की। शिक्षा शास्त्री और समाज सुधारक के रूप में लालाजी का देश के अग्रणी नेताओं के नाम लिया जाता है। १८६३-१९०८ की अवधि में उत्तरी भारत में अचानक अकाल पड़ा। अनेक बच्चे अनाथ हो गये। ईसाई पादरियों ने अकाल पीड़ितों की सहायता के नाम पर बच्चों का धर्म परिवर्तन प्रारंभ कर दिया। लालाजी ने इसका डंटकर विरोध किया।

स्वराज के साथ सामाजिक न्याय आवश्यक

लाला जी अपने क्रांतिकारी विचारों को व्यक्त करने में कभी झिझक का अनुभव नहीं करते थे। उमका मत था कि स्वराज से हम देश को विदेशी शोषण और दमन से तो बचा सकते हैं, परंतु यदि हम सामाजिक न्याय की ओर ध्यान नहीं देंगे, तो हम देश को पद-दलित वर्गों के आक्रोश से नहीं बचा सकते। लाला लाजपत राय के अनुसार देशभक्ति और स्वदेशी की भावना राष्ट्रवाद की पूरक है। सच्ची देशभक्ति यह माँग करती है कि व्यक्ति समाज के व्यापक हित में निजी हित का बलिदान कर दें। देशभक्ति राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना है। यह 'राज्यभक्ति' से भिन्न है। आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता के नाते लाला लाजपतराय ने राष्ट्रीय जीवन में धर्म की भूमिका और देश के अतीत गौरव के पुनरुत्थान को विशेष महत्व दिया, परंतु साथ ही उन्होंने आधुनिक शिक्षा, आधुनिक चिंतन और आधुनिक राजनीतिक संस्थाओं से गहरा सरोकार प्रकट करते हुए अतीत और वर्तमान के बीच प्रभावशाली संपर्क सेतु का निर्माण किया। स्वराज की माँग के साथ-साथ उन्होंने यह सुझाव भी दिया कि अंग्रेज़ों ने भारत में जो ज़मींदारी प्रथा और एकाधिकार-पूँजीवाद स्थापित किया है, भारत की उन्नति के लिए उसका अंत आवश्यक है। एक ओजस्वी वक्ता होने के साथ-साथ लालाजी एक सफल वकील, कुशल पत्रकार और लेखक भी थे। उन्होंने 'यंग इंडिया' नमक एक मासिक पत्रिका निकाली और इंडियन इन्फॉर्मेशन ब्यूरो की स्थापना की। इनकी कृतियों में 'यंग इंडिया' (तरुण भारत)-१९१७, ' द पोलिटिकल फ्यूचर ऑफ इंडिया' (भारत का राजनीतिक भविष्य)-१९१९ और 'नेशनल एजूकेशन इन इंडिया' (भारत में राष्ट्रीय शिक्षा)-१९२० विशेष महत्वपूर्ण है। साईमन कमीशन का विरोध करते समय लाला जी पर अंग्रेज़ों द्वारा लाठियों से घातक प्रहार किये गए। लाठियों के प्रहारों से लगे घावों के फलस्वरूप लालाजी १७ नवंबर १९२८ को स्वतंत्रता की बलिवेदी पर विदा हो गये। अपने शरीर लाठियों के प्रहार झेलते समय लाला जी ने जो ऐतिहासिक शब्द कहे थे, वे पूरी तरह से सत्य सिद्ध हुए। लाला जी ने कहा था कि मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील बनेगी। ऐसा ही रहा, तो भारत ही नहीं, विश्व से ब्रिटिश शासन का नामोनिशान मिट जाएगा। वास्तव में यह कथन बाद में स्वतः प्रमाणित हो गया।

ఆర్య సమాజ్ ....వివరాలు

1. ఆర్య సమాజం పేరు, చిరునామా ....

ఫోన్ నం. ....

2. సభాసదుల సంఖ్య .... 3. చందా ద్వారా వార్షిక ఆదాయము ....

4. మూడు సంవత్సరాల మొత్తం ఆదాయం ....

5. స్థిరాస్తుల ద్వారా ఆదాయం .... 6. స్థిరాస్తుల వివరణ ....

7. సమాజ కార్యక్రమముల వివరణ ....

8. సమాజ ఎన్నికలు నిర్వహించిన తేది : ....

మంత్రి ప్రధాన్

ఆర్యసమాజము ....

ప్రతినిధి మరియు సమాజం యొక్క ప్రతిజ్ఞలు

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్ యొక్క నియమొపనియమాల (Byelaws) సంఖ్య 10, 11, 12, 13, 14, 16, 46, 47, 48, 56, 57, 58 మరియు ప్రత్యేకంగా ఉపనియము సం (2) లను మరియు అన్ని నియమాలను

1. మా సమాజము అంగీకరిస్తునట్టు ప్రతిజ్ఞ చేయుచున్నది. ప్రతినిధి సభ ఆజ్ఞలకు - ఆదేశాలకు విరుద్ధముగా ఏ పని చేయదని హామి ఇస్తుంది. సభకు ఇవ్వవలసిన రుసుము కూడ విధిగా చెల్లించెదము.
2. సభ నియమొప నియమాలకు విరుద్ధముగా పని చేసినపుడు సమాజ లెక్కకు సరిగా ఉంచనపుడు మరియు సభకు చూపించనపుడు, ఈ సమాజ కార్యవర్గమును రద్దుచేసి తాత్కాలిక తదర్థ సమితి సభ ఏర్పాటు చేయవచ్చును. లేదా ఆర్య సమాజమును చరాచర ఆస్థులతో సహా సభ తన స్వాధిన పరుచుకోవచ్చును. సభ ద్వారా తీసుకోబడే ఈ చర్య చట్టపరంగా కూడ సమ్మతమైనదని మేము స్వీకరించుచున్నాము.
3. సభ నియమానుసారము సమాజము యొక్క చరాచర ఆస్తులు యొక్క యాజమాన్యం సభదే ఉండును. వివాదంలో కూడ సభ నిర్ణయమె అంతిమంగా స్వీకరించుచున్నాము.
4. ఈ పత్రములో వివరించబడిన అంశాలు సత్యమైనవని మేము ప్రతిజ్ఞ చేయుచున్నాము.

ప్రధాన్ సంతకం **ప్రతినిధి సంతకం** **మంత్రి సంతకం**

ఆర్య సమాజము.................................

ఓం

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్ర ప్రదేశ్

సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాదు

ప్రతినిధుల అభ్యర్థన పత్రము

తేది : .... దయానందాబ్ద : ....

ఆర్య సమాజం పేరు : ....

సభాసదుల సంఖ్య : ....

ప్రతినిధి పేరు : ....

తండ్రి పేరు : ....

చిరునామ : ....

....

వృత్తి .... ఫోన్ నం. ....

శ్రీమాన్ మంత్రిజి, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్

నమస్తే ,

ఆర్యా !

ఆర్య సమాజము .... యొక్క అనుబంధము (సంబంధము) ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆం.ప్ర. తో గత .... సంవత్సరాల నుండి ఉంది. మా సమాజం నుండి సభకు శ్రీ .... గారు నియమానుసారము ఎన్నుకోబడినారు. వీరి వయస్సు 25 సంవత్సరాలకంటె తక్కువగా లేదు. వీరి ప్రతినిధిత్వమును స్వీకరించగలరని మనవి.

ప్రధాన్ మంత్రి

ఆర్య సమాజము ....

ప్రతి ఒక్కరకి విడి-విడిగా ప్రతినిధి పత్రమును విధిగా నింపి పంప గలరు. అవసరమైన ఫారాలు జిరాక్స్ చేసుకోవచ్చును.

ప్రతినిధి ప్రతిజ్ఞ పత్రము

ఆర్య సమాజ నియమాలను అనుసరించి, ప్రత్యేకంగా ఉపనియమము 4 (ఘ) అనుసారము సదాచార నియమములను మరియు భక్ష్యా-భక్ష్య నియమాలను విధిగా పాటిస్తానని, ఆర్య ప్రతినిధి సభ అనుశాసనంలో ఉంటానని, సభ నీతి నియమాలను పాటిస్తానని హృదయ పూర్తికంగా ప్రతిజ్ఞ చేయుచున్నాను. నాలో దోషము ఉన్నట్లు ప్రమాణ పూర్వకంగా ఋజువు చేసినపుడు నా ప్రతినిధిత్వమును రద్దు చేయగలరు.

ప్రతినిధి

ఆర్య సమాజము ....

....

ఆర్య సమాజ్ .... యొక్క సభాసదుల పట్టిక

కమ సంఖ్య	పేరు	తండ్రిపేరు	వయస్సు	వృత్తి	వార్షిక చందా రుసుము

కోశాధ్యక్షులు మంత్రి ప్రధాన్

ఆర్యసమాజము ....

ఆర్య సమాజ్ .... యొక్క ఆదాయ వ్యయముల పట్టిక

(2002 నుండి 2005 మార్చి వరకు 3 సంవత్సరాల వివరణ ఇవ్వగలరు)

ఆదాయము		వ్యయము	
1) సభ్యుల చందా నుండి ఆదాయము	రూ	1) యజ్ఞం పై ఖర్చు	రూ ....
2) కిరాయి నుండి వచ్చిన ఆదాయమ	రూ.	2) సమావేశాలపై ఖర్చు	రూ. ....
3) ఇతర పద్దుల ద్వారా వచ్చిన ఆదాయము	రూ.	3) ఇతర ఖర్చులు	రూ. ....
మొత్తం		మొత్తం	

మంత్రి   ప్రధాన్

ఆర్యసమాజము ....

आर्य समाज ________ मंडल ________ जिला ________ का

समाज की सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के नाम करने तथा सभा के अनुशासन में रहने का

शपथ पत्र (AFFIDAVIT)

आर्य समाज ________ की अचल सम्पत्ति निम्न लिखित है। जो मुनसिपल ग्राम पंचायत में आर्य समाज के नाम से अंकित है। तथा आर्य समाज के नाम आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के नाम रजिस्टर्ड है नही हैं।

दिनांक : ________ को आयोजित आर्य समाज की यह साधारण सभा सर्वानुमति से प्रस्ताव पारित करती है कि यह समाज, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश, सुल्तान बाजार, हैदराबाद के अंतर्गत है तथा उसी के अनुशासन में रहेगी। अनुबंधित संस्था होने के नाते इसकी समस्त अचल सम्पति की अधिकारीणि (ownership right) आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश को रहेगा। घोषित - अघोषित समस्त चल-अचल सम्पति की मालिक सभा ही रहेगी तथा विवाद के समय भी अंतिम निर्णय सभा का ही रहेगा जो कानुनन वैध माना जयेगा।

हम लोग प्रतिज्ञा करते है कि प्रस्ताव तथा चित्र में जो कुछ लिखा व दिखाया गया है वह ठीक है तथा न दिखाई गई समाज की समस्त चल-अचल सम्पति पर भी सभा को ही मालकीयत का (ownership right) अधिकार रहेगा।

यह समाज सभा की धारा १०, ११, १२, १३, १४, १६, ४६, ४७, ४८, ४९, ५६, ५७, ५८, उपनियम धारा (२) आदि को विशेष एवं समस्त धाराओं को मानेगा तथा सभा की आज्ञाओं के विरूद्ध अपने यहां कोई कार्यवाही न होने देगा तथा जो नियम आर्य समाज के लिए समय-समय पर सभा बनाएगी, उनका यह समाज पालन करेगा और सभा द्वारा नियत शुल्क दिया करेगा।

सभा के नियमोपनियम के विरुद्ध कार्य करने पर हिसाब ठीक-ठाक न रखने एवं न बताने पर सभा को अधिकार रहेगा कि समाज को भंग कर तदर्थ समिति बनाए या समस्त सम्पति के साथ समाज को अपने स्वाधिन कर लें। सभा द्वारा समाज की सम्पति को अपने स्वाधिन करने की कार्यवाही को कानूनन वैध माना जायेगा। जिसे हम स्वीकार करते है।

कोषाध्यक्ष आर्य समाज	मंत्री आर्य समाज प्रतिनिधि आर्य समाज	प्रधान आर्य समाज

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश

महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

सभा के चुनाव की सूचना प्रांत की आर्य समाजों को आवश्यक सूचना और खुला निमंत्रण

రాష్ట్ర ఆర్యసమాజాలన్నిటికి ఆహ్వానం

అధికారులకు అనివార్య సూచన

पत्र स. ४०३६५८/२०१३ दि. २१-०१-२०१३

सेवा में,
श्रीमान प्रधान / मंत्रीजी
आर्य समाज ------------------

नमस्ते ।

मान्यवर महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा की आध्र प्रदेश की अंतरंग सभा की बैठक दि. १२-१-२०१३ शनिवार के दिन सभा प्रधान श्री विठ्ठलराव आर्य जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र. के कार्यकाल को छः माह तक बढ़ाने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। साथ ही सर्व सम्मति से यह भी निर्णय लिया गया कि दि. १४ अगस्त २०१३ तक या इससे पूर्व कभी भी आर्य प्रतिनिधि सभा आं. प्र. के चुनाव को सम्पन्न किया जाए। चुनाव सम्बंधित सारी अधिसूचनाएं जारी करने तथा चुनाव कार्यक्रम को तय करने का सम्पूर्ण अधिकार मंत्री सभा व प्रधान सभा को दिया गया।

अंतरंग अधिवेशन में सर्व सम्मति से यह भी तय किया गया कि दि. ३०-४-२०१३ तक आर्य समाजों से निर्वाचित प्रतिनिधियों की सूची अर्थात प्रतिनिधि आवेदन-पत्र मंगवा लिये जाएँ। अतः समाजों के मंत्री / प्रधान से निवेदन है कि वे अपनी समाजों का चुनाव सम्पन्न कर पिछले तीन वर्षों का दशांश, प्रतिनिधि शुल्क, प्रवेश शुल्क तथा आंदोलन शुल्क सहित निर्वाचित प्रतिनिधियों के आवेदन पत्र सभा कार्यालय में दिनांक ३०-४-२०१३ तक भेज दें। अतः समाजों के चुनाव दिनांक ११-४-२०१३ युगादि पर्व तक सम्पन्न कर लें। विवादों के संदर्भ में जहाँ कहीं भी सभा आवश्यक समझेगी, वहाँ चुनाव अधिकारी को भेज देगी और उन्हीं के देखरेख में नियमानुसार सम्पन्न चुनावों को ही मान्यता दी जाएगी। अतः समाजें नियमोपनियम के अनुसार अपने-अपने चुनाव सम्पन्न करवाएं। निर्वाचन की सूचना सभा कार्यालय को दें। आर्य समाजों को यह भी सूचित किया जाता है कि ऐसे किसी भी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व स्वीकार नहीं किया जायेगा जिन्होंने सभा के अनुशासन और हितों के विरुद्ध कार्य किया हो।

नवगठित आर्य समाजें, जिनका ३ वर्ष का अस्तित्व हो और यदि चाहें तो उपर्युक्त सभी औपचारिकताओं को विधिवत पूर्ण कर आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद से संबंधित हो सकते हैं। संबधता स्वीकार होने पर ही वे आगामी चुनाव में भाग ले सकते हैं।

समाजों के अधिकारी यह भी ध्यान रखें कि दि. ३०-४-२०१३ के बाद प्रतिनिधि आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जाएंगे।

सूचनार्थ व आवश्यक कार्यवाही के लिए । धन्यवाद ।

भवदीय

सभा मंत्री
ह. वेंकट रघुरामुलु

सभा प्रधान
विठ्ठलराव आय

नोट : अगली सूचनाएँ व विवरण आर्य जीवन पत्रिका में देख सकते हैं।

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, 4 - 2 - 15 మహర్షి దయానంద మార్గము
సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ - 500 095
ఫోన్ : 040 - 24753827, 66758707, Fax:24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

॥ ओ३म् ॥

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी संवत २०६९-७० तदनुसार सन २०१३ ई.

क्र.सं.	पर्वनाम	चंद्रतिथि	संवत्	अंग्रेज़ी तिथि	दिवस
१.	मकर संक्रांति	पौष सुदी-३	२०६९	१४-०१-२०१३	सोमवार
२.	बसंत पंचमी	माघ सुदी-४	२०६९	१४-०२-२०१३	गुरुवार
३.	सीताष्टमी	फाल्गुन बदी-८	२०६९	०५-०३-२०१३	मंगलवार
४.	महर्षि दयानंद जन्म दिवस	फाल्गुन बदी-१०	२०६९	०७-०३-२०१३	गुरुवार
५.	ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्र)	फाल्गुन बदी-१४	२०६९	१०-०३-२०१३	रविवार
६.	लेखराम तृतीया	फाल्गुन सुदी-३	२०६९	१४-०३-२०१३	गुरुवार
७.	मिलन पर्व / नवसंत्येष्टि (होली)	फाल्गुन सुदी-१४	२०६९	२६-०३-२०१३	मंगलवार
		फाल्गुन सुदी-१५		२७-०३-२०१३	बुधवार
८.	आर्य समाज स्थापना दिवस (नव संवत्सर)	चैत्र सुदी-१	२०७०	११-०४-२०१३	गुरुवार
९.	वैशाखी	चैत्र सुदी-३	२०७०	१३-०४-२०१३	शनिवार
१०.	रामनवमी	चैत्र सुदी-९	२०७०	१९-०४-२०१३	शुक्रवार
११.	हरि तृतीया (हरियाली तीज़)	श्रावण सुदी-३	२०७०	०९-०८-२०१३	शुक्रवार
१२.	वेदप्रचार- श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबंधन)	श्रावण सुदी-१४	२०७०	२०-०८-२०१३	मंगलवार
१३	सप्ताह श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद बदी-०८	२०७०	२८-०८-२०१३	बुधवार
१४.	विजयदशमी / दशहरा	अश्विन सुदी-१०	२०७०	१४-१०-२०१३	सोमवार
१५.	गुरुवर स्वामी विरजानंद दण्डी जन्म दिवस	अश्विन सुदी-११	२०७०	१५-१०-२०१३	मंगलवार
१६	महर्षि दयानंद निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक बदी-१५	२०७०	०३-११-२०१३	रविवार
१७.	स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस	पौष सुदी-०६	२०७०	२३-१२-२०१३	सोमवार

विशेष टिप्पणी : - १. आर्य समाजें एवं आर्यजन इन पर्वों को उत्साहपूर्वक मनाएं ।
२. देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पूर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

विठ्ठल राव आर्य

सभा प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUEMAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

कलांजली प्रेस विठ्ठलवाडी में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.सु.बाज़ार,हैदराबाद